MSS Sangrah (~~in Devnagri Script~~) HINDI

a) Rachna Datt Kavi on Lord Krishna.
b) Jagat Jot Prakash by Puddeer
   Prohit Datt Kavi.

1406

1406

1406

CC-0.Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

8H1
D234
दूतकाव्य की रचनाएं
(Title not given)

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

1406 M.

श्रीगणेशायनमः ॥ गोपसषानिकौसाथलिएअरुगो
पनिकौसुभवेषवनाए धरिसौओडिरह्यौसिगरोत
नुतामैपितंवरकौछविछाए कोटिककामसमानविरा
जनदनंदकेहैकवितामनभाए वेनुवजावतगीतनि
गावतआवतहैंहरिगाइचराए १ संघसरोजगदाक
रचक्रविराजततीनयौलोकविराज्यौ कुंडलअंगद
चारुकरीटलसैवनमालसरीरतिराज्यौ तोहितेद
तचराचरविस्वप्रकासधरैसिगरौपचिराज्यौ फूर
नकामभएअभिरामसुकामतेंस्यामस्वरूपनिराज्यौ २
कंजसेलोचनहैंमनरंजनतैसोईहारलसैउरभारौ
तैसेईकाननिकुंडलचारुऔचारौभुजानिमेभूषन
धारौ अंवरपीतलसैरसनासुभदनंदकैछविरासि
सलोरौ सोवतयौंव्रजभूपवनायकैस्यामस्वरूप
अनूपनिहारौ ३ अंवरपीतलसैउरमालवजावत
वांसुरीलेतउमाके कोटिकसूरजचंदसमानदिपैत
हंगोपसषानिमैवाके सुंदरवैननिसौंमनुमोहत
भूषनभूषितमोरपषाके याविधिसंगअनंदसौंनंद
कौसूनुरमैवृषभानसुताके ४ पीतपटकटवाधेंकिं
किनीसवदसाधेंललितलुकटकांधेंसोकुमारतनमै
केसरतिलकभालउरसोहैवनमालकंठमनलालवि
हरतवालकनमै कुंतलकलितसाजैवांसुरीमधुर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बाजैंमोरपछसिरसाजैंसोहतसषनमै नाचेकरदैदै
तालडोलैसंगगोपीग्वालऐसेनंदलालछविसालमैंरम
नमै ५ सोहतजुगऊचारगुंजनकोहारहीयेलियें
करवांसुरीवजावैमीठेनदके गोपनकोपुंजमिल
ठाढेवनकुंजनमैगाढेद्दगहेरहेजोवनकेमदके
आछेचुकचंदुआवनावैसरमोरनकेवदनदुरायनि
समोतीकिधोंरदकै वाधेंपटपीतकटकांधैसुरसांधे
उरयेसीस्यामसूरतकेजातदेवसदके ६ लटपटी
पागवांकेपेचनमरोरवांधीचटपटीलागद्रिगदेषतनी
रूहै केसरतिलकढिगकुंतलअलकलालकुंड
लजगतझालदीपतअपारहै वंसीकीललितदे
वफूलकरगाकीकटपटजरीकोगरमोतिनकोहा
रहै रूपनकीवुररीचुरायेचितगोपनिकोयेसी
छवऊपरहोंजोंवारवारहैौ ७ अजवजारला
लपटकाहीजामालाललालपागचूंनरीकीपीत
मपेवूलै छवीलीछरीहेलालचकरीकिरावैला
लगरमैगुलावमाललाललरवेंघलै नगनकी
मेमलालतहांठाढेनंदलालवदनवनचंदवलमम
मेविसेषलै आषनमैडोरेलाललाषनमेघनस्याम
लालभयावाहेतोगुपालछवदेषलै ८ गंगाधरगि
रधरनविषवअग्रासनगरुडासन पीतांवरगजचर्मकां
निमानिमुडमालासन चंदनभसमललाटचंद्रचंद्रि
काविराजत मुंडमालवनमालसघडोरूकरसाजत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रैलोक्यनाथत्रैलोक्यभवसुखविधानअछतधरन
संतापसोकसंकटहरनसोहरिहरप्रभुसंकरसर
न ९ वहहैकभाषापदकहतहोजैसेतेसेहम
तुमैगावतसदाईवेदवानीमे वहतुमेमासभरेहा
थनछुहतहमेकहैयोमासवीतेहैतुम्हारियेकहा
नीमे लक्ष्मीनरायनअनोखेरीऊवारतुमरीपुनि
कसतिहैतुम्हारीरजधानीमे हमतुमैगंगाजल
चाहतचढायोतुमरीऊरहैसदनाकेवधनाकेपा
नीमे १० तेरेतानतनकनव्यापतवियतमोहिते
रेवलचाहनवदतहोनकाहीए तेसेपेसरनरहो
तुमहीकोंज्ञाननहोतोविनानऊरकोऊसैतलोव
साहीए विदुरसेकुवलदुषितकोअधारतुही
आपनीकपातेंआदपेतलोनिवाहीए तुहीही
मलोहैपेअप्रक्षेजिनहोहुनाथसवजगरूठोएक
तेनरूठोचाहीए ११ वेदननिवेदनसुनेनअप्रा
नमेदनिमेंवेदनहरनतातेविरदनिवाहिए
जाहरजहानदीनचाहरकरसियाकोचाहकन
गाहकनकोउअवगाहिए रावरीदयाकेविनतात
मातभ्रातसुतमीतजाततातनकोनाहिपरवाहि
ए चाहियतसहीएकतरूठोश्यामदीनपरसव
जगरूठोरामतूनरूठोचाहिए १२ गोरेमुंहगोर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लहरैंहसतकपोलवडेलोइनविलोललोनेली:
नेलाडुलानपर लोभलगेलाललषिवेकोछविदे
वकविरविसे७३तरूपसोभाकेसमाजपर वादर
कीसारीदरदामनिकिनारीजगमगेजरतारीझीनी
झालरकेसाजपर मोतीगुहेकोरनिचमकचहुं
ओरनिज्योंतोरनितरैयनकीतानीद्विजराजपर
१३ वनिताकीवेदनिकोंआइहोंनिवेदनिकोंवेद:
निकीवेदनिकोवेदनियरातुहै कुंजउ७वारिजात
वारिजातवारिजातवारिवारिजातकहौकैसेसियरा
तुहै तीरतननपीरतननाहितनपीरतनलेहोहरिकी
रतनाहियेंपियरातुहै ज्योंज्योंदिनभरैघरीत्यौत्योंअ
लिभरैघरीज्योंज्यौंपियरातिआवैत्यौंत्यौंपियरा:
तुहै १४ विपरीतमेंप्रीतमेंपियारीखिझैबोकरैन
षहंछोरदैं ससकेसतरायजुकेकहिकेकेहांफेर:
नयाफरकेदफदैं कहुप्रानपियापरिवाहिनही
अरुकामकलाकीवुझातिनदैं जिमिसोंनचिरीक
रैकोटिकलापैतरैकोकहैयहहोंनवदैं १५
मीडतउरोजरिसरुषकैप्रकटप्यारीमंदिमंदिहग
निवदनासिसकीभरै लीलाधरनीवीगुनछोरत छ
वीलीउउकोरैजुकेप्रीतमकोकरकरसोंधरै मु:
रिमुरिजाएसतराएअरसाएरसरोसगचेंदगतअ
नेकभांनवितरै प्रेमचितचाहीकरैंनेकुहियरा

लीकरै नाहीकरै हाहाकरै हियौं हरै बिहरै १६
प्यारेके अधररस लीवेकी कटोरीजोरी गंगादत
कहीय हउपमा अतोलमै किधौ चंदमंडल
केमध्यछायकीनोराहमांनिदारुणरवमयोजो
देवतोलमै किधोंरूपधनिकेसुगाडिवेकोकी
मधनिवोदीसुभकूपिकासुजांनियहलोल
मै देखैरतिलाजतहैअतिछविछाजतहैके
सीगाडराजतहैप्यारीकेकपोलमै १७ छ
विकसुरकीहरिरहीअंगअंगहरितैंदेखिऐंदामि
नीसीघन कंजसेकोमलहाथअंग्रेपाऐंहैंखेल
लिखेलकेबीचदीएमन वालिचितौनवहैकवि
राजपैकालिहीतैंकछुऔरभईतन सईसवमे
पलकैऐसेंजोवनभालमैजैसेंपतालधऐोधन
१८ गतिमंदगऐंदनकीगहिनेसिकछीनभई
कटिसोचतगी लरिकाईकोलेसलग्योतनि
केअंगतैसिरजोवनजोतजगी कविदत्तजरं
चकवंचकरीतपरीतियकेपियप्रेमपगी कछु
कामकथासुनेकांनलगीनुसकांनलगीयेंस
कांनलगी १९ गातनिसआरतिसहेलीनि
बुराईलखिलालनसौंउकतिबडाईकरैभागकी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुधारतिवीरपीकपौंछतिकपोलनितेंछलकतिछ
विरदछदनकेदागकी ॥अंगियाकीतनीदेतहूख
तिनखनितातऽफनातअंगावनऽमगअनुरागकी
॥आरसीदिखावतलजाएवालमुसकाएछहूरछहू
रऽठैलहरिसुहागकी २० नैनगडेतोगडेऽन
मैंछविमैंनकेवाननिकीसरसाततहै जोकुचको
रकठोरगडीतोगडैवहतोकठिनोदिनरातहै
दै॥अलवेलपनौ॥अलवेलीइतैमुखमोरजहीमुस
कातहै कौंनअचंभोकहौंयहयाकेकपोलकी
गाडहियेंगडिजातहै २१ सुंदरवदनतेरोसोभा
कोसदनराधेवदनवनायोचारवदनवनायके
ताकीऊचिलेनकोऽदिनभयोरैंनपतिकृतमति
निजुकरिराख्योवहरायके कविमतिरामजाहि
निशाचरचोरजानिदीनीहैसजायकमलासन
रिसायके रातौदिनफेरौ॥भ्रमरालयके॥आस
पासमुखमैंकलंकमिसकारखलगायके २२
हैकैउहउहेदिनसमताकेपाऐविनसाऊसरसि
जनिसरससिरनायोहै निसाभरिनिशापतिक
रिकैऽपायविनुपाएरूपवासरकुरूपकैलखा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

योहै कविमतिरामतेरीवदनबरावरीकोंआदरसौंवि
मलविरंचिहीवनायोहै दरपनरह्योयातेंदरपनकै
हियतमुकरपरतयातेंमुकरकहायोहै २३ गेलत
समीरलेकलहिकैसम्मलंग्रेक फूलसेदुकूलनसु
गंधविथुरोपरै इंदुसोवदनमंदहासीसुधाविंदअर
विंदज्योंमुदितमकरंदवियरोपरै सुंदरललिलारस्या
मजुलकेअलकभालमगमैधरतपगजावकधुरोपरै
रै देवमनिनूपरपदमपरह्वैरहैभूपरअनूपरूप
रंगनिचुरोपरै २४ इन्हहैएकसावरोअहीरताहि
देखतहीधीरनरहितकुलकाननधरीरहै याही
भयभीतह्वैरहितेनिवाजतेउमोहनीमूरतवाकीआ
खनखरीरहै छोडनिजप्यारोसुपनैमेंनजान्योऔ
रवहदेखेओरेमतहियमेंअरीरहै ऐरीयहगांव
मैनमेरीवसकितमोहिपतिव्रतराखिवेकीचियद
परीरहै २५ चकसीरहीहोतुमतकसीरहतिउ
नचितईतनाहुसभवनविसरातीहो षोल्हती
नअंगगननबोलतीनवचनक्योंहूंडोलतीरहत
उघरूषेवररातीहो गंगादलसीवीरीनकोंनपै
प्रतीतकरदेखउरुलोकनकोसकुचडरातीहो
तोरतोरतनिहीमरोरेंमानजोरकरआजअजरा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गकीसौंकाहेअगरातीहो २६ सोरहसिंगार
साजसरससुहायेसबसुखमासमहनसरीरसुभ
सरसात स्रवनभूखननभूखितहीभलीभांतपू
रनप्रगटप्रेमझलकतअवदात दानवीनजाकी
सरनग्रानवीसुनेकोमनगंगादत्तकहेकविमानवी
कितीकवात प्राणनाथप्यारेपैसहेलीअलवे
लीसाथभामनीनिसामेंदेखीदामिनीसीचलीजात
२७ कंचनमहलबीचकंचनपलंगपरकंचनवर्न
बालसोवैनिसराजसी पंकजसेपानिपुखीलंकज
निपटछीनअकज ७ घाघपरीसोभासुखसाजसी
मोतिनकीमालखिचरहीदोउकुचनिपैभुजनसोद
बीफबीरहीछविछाजसी रूपेकीसुमेरकीजुगल
सुभस्रंगनपेमनोकामवाजकीबधीहैपतवाजसी
२८ बालमबालविखेबनकेबपरीतबीनोदविहा
रबनायो कुंजकेभीतरगुंजतभौरसुलेतपुखीसु
षपुंजसुहायो कानतेंछुटितरेनागिरोसुपरो
कुचपैमुखत्योंछबिछायो वैरसौंकोपिककानि
धिनैसुमनोचकवानकोचकचलायो २९

६ गौनैभएदिनद्वैकभएदुलहीकेसबैअंगअंगऔरभएहैं
सीसीविलोकनपीरीकपोलनिलाजसौंलोचनजालन
रहैं छूटिहैमोतिनकीलरसुंदरमोलीउरीकुचछु
टिगएहैं लगेनखवीचउरोजनकेमनोकामसुहाग
केबीजवएहैं ३० गौनेकेद्यौसकहैमतिरामसहे
लनिकौजुरकैगनआयौ कंचनकेबिछुआपहिरा
वतप्यारीसखीपरिहासबढायौ प्रीतमस्रोनसमीप
सदावजयौंकहिकैंपहिलेंपहिरायौ कांमिनीकेज
चलाउनकोकरउचोकीयोपैचल्योनचलायौ ३१
सेउतीवेलाचपेलीजुहीचहुधारहयौफूलिगुलाव
कोगोतुहै फूलेरसालविशालमहाअरविंदनहूं
मैभरोमधुसोतुहै वाहीकीन्यूनताहैजगमेंइहको
सवहौरनहीमेंउदोतुहै चंपककेनहिंजातहैतौ
कहौभौरकोभैयानिवारुनहोतुहै ३२ आनद
होतसरोजनकेउरकोकनकेहियमेंसरसातुहै
पंथिनकेउरमेंअतिआनदऔद्विजदेवलषैपरभातु
है आरतसीतकोमीतनिहारतसोपरसादकहेनि
जवातुहै जोनउलूकनिहारतहैकहोभानको
जानप्रमाननजातुहै ३३ जेयरकतपरनथिरन
कवहूंनससिससजोरसंदरदरसे जेचंचलचतु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रचलतचलदलनिमिश्रलदलकेरविचित्रवसे
जेदरवरगमनपमनसमकृदतकुरंगनहूवानहू
से तेसंज्ञरषानद्यावनंदवरग्रवदलनविश्रषा
नवकसे ३४ लगिजिनकेधकनधुकतपघे
दघतधरनिजलधिछलके ग्प्रतिदिग्गसदाम
हवकुविकमरुहगरदकरतगढजेवलके जि
नमलिनकियोवकुसुंडवायकजरवायकूलथा॰
लरिकलके तेवारनवकसतसाहिकविनुडु
मिकारनओरसाहिलके ३५ जेघुअतधार
उदगारमेननभगगधारजलसुंडभरे जेचलति
धरनिधसकतफनमसकतकसकतकमरपीठ
पसरे घनघननघननघंटाघनघोरतद्दिगदं॰
तनिकेमानहरे तेदुरदभूपप्रदीपसाहिजूदे
राजीकविराजकरे ३६ उघटतसिवसंगीतसुर
सुघटततानतरंग बाजतदुंदिभिधारधुनिधुंधुं॰
धुनितमृदंग धुंधुंधुनितमृदंगध्वनिधरधोक॰
धुकमनि उड्डुडनपसमड्डध्वनधरसड्डसनिस
नि वंडडमरुउदंडडिमिडिमिदंडसुघहृत त
ततमिकिलमत्ततमसततततथेइउघहृत ३७

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८

श्रुतिसुरग्रामविरामतजितालतानततकार परस्पि
वंडतंडवकरततथेईधुनितार तथेईधुनितारत्रि
पट्ततारस्सरतर स्तत्यस्सरसरकृत्यकरकरवृत्य
थरथर थ्रुड्डुड्डसतिधराधिधधकिधरापधुरथुर
हंसस्सदपरसंसस्सिवसिवसंसस्तुतिसुर ३८ गि
रिगिरिपरतगिरीसपगपरतपठतजेवेद नाचत
रंगञ्जनंगरिपुरंगगाहिगतभेद रंगगहिगतभेद
घतुविधिगंगङ्गरहर गंग्रगगहितमतंगत्वगत
हतुंगतनिकर भावप्रगटविभावभवनप्रभाव:
भारिभदि भूरिभवनविभेन्नभुखपरभगगिरिगि
रि ३९ सनमुखगजमुखसहसमुखषनमुखसत
मुखभीर गावतिगीतसरस्वतीसंग्गगहितगभीर
संग्गगहितगभीरग्गनगनगावतननन केकि
कुलकुलेकूकिकलरवकूजिज्ञनमन रंजि
ग्गेगजरजेविजपजपम्रत्युंजयसुख गंजंज्ञतिग
नगुंजिज्जुरिजुरिपुंजसनमुख ४० तानतारत
तकारतालवाजतसिवनाचत तथेईधुनिरंगराग
प्रेजनाथसुमाचत डिमिडिमिडमरुनिनादनाद
सिंगिमुखमुकी मृदुमृदुमधुरमृदंगघोषग
तिदोषजुथुकी ततिपट्७पट्ग्रटपट्टहपट्ति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पटसुपदविछिपछ कठ फंफटितफननिः
फनलपटिसोसमिटिसमिटिकंपतकमठ ८१
आयोहै वसंतजहांसंतउंसुचितहोतनिहचिंततेई
दयादेवजोइजोरीहै तातेंतजिमौंनकरलालनपै
गौनआलीसुधीकरभोहैंऐसैनाहकमरोरीहै मान
कह्योमेरीऐरीमानकेनवासरहैमानतजिमिल
तेउकहाकछुभोरीहै किऐंविनमानजोतोमान
तनमाननितोमानकदिवेकोकहाअरेंवितयो
रीहै ८२ वरनवरनतरुफूलेउपवनवनसोई
चतुरंगसंगदललहियतहै वंदीजनवोलतिवि
रदवीरकोकिलहैगुंजतमधुपगानगुनगहियत
है आवैआसपासपुहपनकीसुवाससोईसौधेः
कीसुगंधमाहिसनेरहियतहै सोभाकेसमाजसे
नापतिसुषसाजआजआवतवसंतरितराजकहिय
तहै ८३ फूलेरूषविविधिवेरंगकेवितानताने
कदलीघनपातनकनातनकेघेरेहै गुलकेवि
छौंनाचारोकोनाछायेछौंनीछविवैठेपीरीपागसो
हेंभौरभटघनेरेहैं वीचहरवानठीलन्यारीक्या

८ रीहाटबांटजंडासेसयेदन अप्रकासकीनैनेरेहै
नगरनिवासीतेप्रवासीदेखेहरिचंदबागनमैफाग
खितराजकीनेडेरेहै ४४ सोवमसुवारअलगार
चहुंडेरनितेंकोकिलनिकीवैनबोलतविराजके
देवनाथफूलेवनवागतेंनिसानवानमधुपमतंगम
तवारेदलसाजके धीरजगलीमदहसदमांमभा-
ज्यौअवकोनकेसलारेसलरेगेकोटलाजके म
नगटवारचाहेनाहेमिलवेकीजवेयौनकेनगारे
भारेबाजेरितुराजके ४५ जैसीअवतैसीअवेभले
हेनरूसेकोउत्तौरीसहाइतातेतोहिमैसुनाइहै
अवहीतेंकहतपुकारेंसावधानहोवसुनियतवाके
संगकोकिलकसाईहै कहतप्रवीनरायअपनेअ
पनेघरहिलमिलरहियौवसंतदिनआईहै भ्रमि
तफिरतभौरमौंनभामिनीकेमानकरेमाईताहि
मदनदुहाईहै ४६ मेहकौटेसुगंधदुबदाईअ
तिचहूंलहलहीलतासबकुमनपरछाईहै कहु
नसुहाईदिनरेंननविहाईआलीफूलीवनराइवि
याहीयोसरसाईहै बौरीअमराइअलिपातनडरा
इहायहरसुबदाईयहकहिमुरझाईहै कोकिलक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

साईकूककुहकसुनाईफिरीमदनदुहाईदुरीबसं
तरितआईहै ४७ गुंजेंगेभौरप्रयागभरेंअवबोले
गीकोकिलरीपिकगायकें फूलेंगेकेसगुलाबजहां
लगदोरेंगेकामकमानचढायकें डोलेंगीवायसु
गंधसुवारकबहेगीहीयेंमैसलाकसीआयके मेरें
कहेंनमनेहैबवाकीसांयेहैबसंतलेजेहैमनाय
कें ४८ बिबसीब्यारलागेंइद्युसेसिंगारसोउलाईए
सीलगैसेतसेजकीसजनिपै काशीरामबन७पवन
नितेंआवेंदोरकेंसैवचियेरीपीककूकनकजनिपै
बिनरजराजदुजराजहिसमेतआलीगाजपरोरे
सीरितुराजकीरजनिपै भौरनकीगुंजन७हुँपरा
परागपुंजनसेंसोचनसकोचकुलकानकीतजनि
पै ४९ आयोबसंततमालनसेंनवपल्लवकीअति
जोतजगीहै बोरकेलालरसालभएतिनउपरको
किलआनबगीहै भागनुभागिवयोविरहीजनुवा
गनिबागनुआगलगीहै फूलेपलासरहेजितही
तितसेमररातेउरंगरंगीहै ५० तीनपुरजारे७
निकहतपुरानबेदडुनितीनौलोककीयेतयतपर
महै विकलसकलजलथलकीनेदेहीफूलबाए

६ शैलदेही उनिकीनोईभसमहै जगमैननलमकीनीसा
नीयहराषेनाथउनिठहरायौसाथगायौगुनतमहै
ग्रीषममेभानुजीकीभीषमतपतिसोत्रिलोचनकी
लोचनकीज्वालतेविषमहै ५१ सेनापतिउवे
दिनकरकेचलतिलुवैनदीनदकुवैसवडारतसु
षायके चलतपवनमुरझातउपवनतनलागो
हैतवनडरैम्भूतलतपायके ग्रीषमतपतिविलु
भीषमलगतियातेसीरकदवीहैतहषाननमेजा
यके मानोसीतकालसीतलाउकेजनायवेको
राष्यौहैविरंचवीजधरामेधरायकै ५२ जीवन
कोत्रासकरज्वालाकोप्रकासभोरहीतेंभासकर
तेजपुंजछायौहै धमकाधमकधूपस्षतत=
लायकूपपोनकोनगोनभोनआगिमेतचायौहै
रहेहकिचकियकिषगष्विगमीनतकिजेठजल
थजलतलफिततनायौहै मेरेजानकाहूघन=
स्यामजगमोचनकोतीसरोत्रिलोचनकोलोचन
षुल्यायोहै ५३ उमडिउमडिचहुंओरनेघुम
डिआयौत्रिविधसमीरतेंसकलजगम्बेरह्यो कु
विसिवकंठसोरकरनमयूरलागेनिपटप्रेतापीते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गतऊनिकोग्वैरह्यो रससौंभरेहैंपरपीरकोनजाने
परनिपटगंभीरह्वैधरनिछुकिछेरह्यो गरजिगरजि
उलसायोचितचातिककोइंदनकीवैरकौंनिमूंदि
मुषहेरह्यो ५४ कारेंग्रथयारेभारेलागतडरावे
घननाथधुरवानकीभईहैजोरथामिनी तीरसीऐछे
दतसरीरनएनीरस्देंछायोछितितमज्योनह्वैदिन
जामिनी दरजतिछतियांतियाकीघनगरजतितर
पितरविडरयावतिहैदामिनी रतिपतिनृपतिकरिहै
उतपतिअतिपतिविनुकैसिकअकेलीवचेंकामिनी
५५ उमडघमडघनआरेहैविविधिरंगनाथचतुरं
गसंगदीहदलधरिकें केकीकूकपायकसहायकहै
भेंकनगनैंकीनकरतअवबेलीदोसभरिकै गरजन
गारेविरहीकेतनगारेचहुंओरअलगारेकैधुरवा
पसरिकें पावसनरेसकोपरोहैपेसषानोंआयगोर
हरतेंग्रीषमगयोहैकूचकरिकै ५६ वाजतनगा
रेनदीनारेमेघतारेदेतझिंगरनिझंझेरमैंकनि
वजाईहै कोकलअलापचारिनीलग्रीवनिरतपा
रियोनविनकारिचारिचात्रिकलगाईहै मनिमाल

जिगनामुमारकतिमरथावचोरसचरागचाऊचप
p. लाचवाईहै बालमविदेसगयोदुषकोजनमभ
यौपावसहमारेल्यायोविरहवथाईहै ५७ दूर
गडुराईसेंनापतिसुषदाईमाईआईरितपावस॒
नपाईप्रेमपतियां धीरजलधरकीसुनतधुनधर
कियोदरकिसुहागनकीछोहभरीछतियां आई
सुधिवरकिहीयेंमेंआनकरकीसुमेरीप्रानप्यारी
वहप्रीतमकीवतियां वीतीऔधआवनकीला
लमनभावनकीउगभईवावनकीसावनकीरति
यां ५८ ज्योंज्योंघनघंमेत्योंत्योंलोटैंवालमंमेंला
गीविरहकीधंमेंओअतनुतनुजाओहै टेरको॒
किलाकीयेंचलाकीचंचलाकीमेनछाडसनवा
कीनेकनैननउदाओहै ऊंधअवलाकीरहि
रेकहैपलाकीसोहनंदकेललाकीदुषजातनउ
वाओहै आयोधुरवाकोजैसेपौनपुरवाकोतैसो
वोलमुरवाकोडरवाकोजुरजाओहै ५९ मेच
ककवचसाजवाहनवियारवाजगाढदलगाज७

हेरीरघवदनके सूरजमनतिसमसेरसोउदामि
नीहैहेतनरकामिनिकेमानकेकदनके पैदर
वलोकेंधुरवानकीपताकेंदेषिघेरियतघेरचहुं:
ओरहैसदनके निकरनिरादरपीयाकोमिल:
सादरएआएवीरवादरबहादरमदनके ६० भूमि
आयोभूमियनघुमडघटानिभरिचात्रिकचढिकवि
तहितकोहरषिगो धुरवाथमकवनपुरवापरिस
तनमुरवाकुहकिधायधीरजधरकिगो जीवेक
हिकोनजोनआवैरीअजोनवहगोनकोविसासीभौ
नभारसोभरकिगो करिकेंपयानप्रानविरहविमा
नचढियाहीमैसकोमवामलोचनफरकिगो ६१
वादरनहोहैजुरआएदलमपनकेबुंदियानहोहैपं
चवानजरलाईहै दादरनहोहैचहुंओरकनकी
ववीलेंमुरवानहोहैसरहांककेसुनाईहै वगुलान
होहैसेनाथजामभगवंतजूकीचपलानहोहैंसमसे
रैंचमकाईहै वालमविदेसतातेंग्रैहनीकेमारवे
कोजुगनूंनहोहैकामजामगीजगाईहै ६२
उमडिघुमडिघटसंघटमैघेरापऔवादरसुभूमि
भूमिभूमपरसतहै तमआतिछायोबोलचातक
समैसुनायोमैनसरसायोमनचैनसरसतुहै च

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

११ पलाचमकचारुचौमुषचरागभईताहीकेप्रकाससैं
नगरदरसतुहै अमलअवासतेंउठतफूलझरीमा
नौगगनतेंजिंगुनकेव्रिंदवरसतुहै ६३ आईरि
तपावसभईहैमनहरीहरीसरतासकलसरवर
सरसतहै जहांतहांबोलतपपीहामोरझीलीगन
दादुरपुकारतपथकतरसतहै कारीअंध्यारीमै
उडतजुगजिंगनकेमहाराजतिहिंसमेंऐसेंदर
सतहै जरिजरिउडितवियोगनिकेअंगअंगमा
नौघनविरहतेंअंगारबरसतहै ६४ कारीका
रीघटाकोंथेंबीजुरीकोछटातामैंअरुवगपांतअ
तिघुमरीसुहाईहै घोरैघनेंबादुरकरतसोरदा
दुरऔनाचेमोरठौरठौरअतिसुषदाईहै सीतल
सुगंधमंदमारुतवहैनीकेहरतिहरतिलताकुंज
मयनाईहै ग्रिहभीमसेंनपियबाढेअतिचैनहि
ययेसेसमैपरेंपुनवरषाजुआईहै ६५ सेनस
मैसुषधामसेंनायनथनस्यामकहतहौंऔसेमेरेतु
हीसरवसहै अवतोवीरविरहकुवजासोंरमिर
ह्योसुरततोविसारीभयोदुरलभदरसहै प्रीतक
रमोहितरसावतहौमोहीतुमकाहूनिरमोहीम
नकीनोकरकसहै बीतीवरषासीआपपतिकोनी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऋरकसीडेसीमनवसीहैतोमेरोकहावसहै ६६
ऋवधवसंतरितऋाउनऋाउनकह्योग्रीषमवदी
तभईवरषाविहातहै कोकिलकीकूकघनघोर
नसहिसकतकेकीउरलागीमानोविरहकीकातहै
प्रीतमवियोगऋग्रऊव्यापतविरहतनसाउनकीकारी
रातिसापकैहैघातहै ऋायौहैचौमासोसषिदेष्यौ
तैतमासोकछुकांकूफिरगएज्यौंकमानफिरजातहै
६७ छूटेवारछूटासोहैस्याममेघघटाजामैचित
तविचित्रषोरइंद्रधनुलाष्योहै दांतनिकीपांतिजी
गुननुसीविराजतहैवगपातिमालमहांमोतनकोसा
कोहै ऊीगरनिऊनुकारभूषनकोधनुकारचात
कोलैपीउपीउभाषतहीभाषोहै दामिनीसीदमक
तिदेहदुतिगंगादत्तकामिनीसिंसवतनुसांउनकेरा:
ष्योहै ६८ कारीभयानकभूतनिसाधनस्यामके
वोलनकैसंपतीजै पापीपपीहरटैपीयपीयसोके
कीकीकूकषशोतनुछीजै यैसेमेप्रीतमलालमि
लैकहोधायकैकंठलगाएकेलीजै सषीपीरभईघन
केगरजेकहोरुदपरैतनकेसेंकैजीजै ६९

मयाव देई प्याकी पुसतक
श्री सरकार दातव

कवित्त ॥ श्रीः

हो तो पत जादि मेरी हो तोरी सुमारग्या
११ ली ग्रंब केसौं गम्ह्रं पे व वरल घ पाव ता
॥ कोकिला भ्रमर को ले बादर के प्रेम
ह्रं ते पे वा कैं सी हां कस्तु नानिजी
य मैं ज्यौं ध्या व ता॥ फुले फुले फु
लेहे ब भुलन ल्या मेरा पी यां
कै के हीजु ता न जो हिंडोल की सु
नाव ता॥ कहै री म स्ती री उध देस
थो रे रितु है री जो हो ता री व सं त
सो तो कंत मेरा आव ता॥ १॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वजीहैवजियकलंकलग्योसुनिकैरुषभानकुमा
रिनजीहै नजीहैवकोउकदाचितकामिनीको
नदेवाकीजैसानकोपीहै पीहैवदेससदेसनपा
वनमेरीउदेसकोमेनसजीहै सजीहैकहाव
सुहैहमरोविसवासनवासुरीफेरवजीहै ८०
जवहीवसुरीरजवाजतहैतवहीछिदजातहो
येपसुरी पसुरीनचरैत्रिणतापकहारसना
घनस्यामसुहैरसुरी रसुरीततजैघरकीघरनी
वरनैवरखैवरसैअसुरी असुरीरजवालविह
लभईनंदनंदनसोनकहुवसुरी ८१ वसुरी
नचलैतुहितैनकछुतनछेदतहैपसुरीपसुरी
पसुरीनचरैरुणतेरैवजैकहुतोमेभजोविसको
रसुरी रसुरीकरडारतमानसकोअवतंनितकैं
नविरअसुरी असुरीनरहैपलयारजमेव
सुरीरजवैरनतंवसुरी ८२ वारीविचारीन
जानैकहूमनमोहनऐंचकौताहैनिहारी
हारीसवैमतिभूलीगईगतिव्याकुलदेहविया
भइभारी भारीअचंभतऔरसुनोमुखसोतनकी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१३

१३ सुषमाकरीकारी कारीसींगारकीयौनकहतन
कानननैमेंपहिरेहुतेवारी ७३ गाइहैंमंगलचा
रघनौतकिंग्रावतहीतननतापबुझाउहै झाइहै
पाइगुलावनिसौजरवाफकेपावडेंवानविछाइहै
छाइहैमंडपवादलेसींससिनाथहौंफूलनिको
ऊरलाइहै लाइहैंसोतनिके७रसालजवैह
सिलालकैकोकंठलगाइहै ७४ कागहियेगुन
श्रीगुनरावरेंश्रीगुनहैतोहमारेहीभागही भा
गहिरैनभई७नकेहमरेभईभोरलपेटनपाग
हि पागहिंग्रायेदृहां७नकेग्रवमेटोललारके
जावकदागहि दागहिवेवतीयांसखियानकीभो
रहीतेजो७डावतकागहि ७५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अहैहीआदरकैपतिकौपुनिआछेहीलैपरअंकमुबा
रक आबिनपैसिरयैकहिमाथैपैआऐहैलालजहां
पगधारक लालनके७रलागीनबरेषसोदिष्टपरीइ ऊती
कवारक बालुरनार७सारदो७करबोलि७नीपिय
चंदमुबारक ७६ कनककबरनवालनगनफबतभा
लमोतिनकीमाल७रसोहैभलीभांतिहै चंदनचढाय
चारुचंद्रमुषीचांदनीसीप्रातहिआयकेपधारीमुसका
तिहै चूनरीबिचित्रस्यामसजिकैमुबारकज्यौंढापी
न[illegible]षतेनिपटसकुचातिहै चंदकोसमेटिकेंल
पेटिकेंनषतमानौओसकौप्रनामकीयेंरातचली
जातहै ७७ कान्हकौनीकीचितौनचुभीचितका
लरीकोकीलंग्वालगुआछन देषीमैनौषीसीचो
षीसीकोरलौओथीपरे७घरेद्रिगजाछन मार
हीजारेनिहारेमुबारकहैसेहजैकजरारीत्रिगा
छन काजरदेरीनयेरीसुहागनआगरीतेरीक
टेगीकटाछन ७८ पटमीनैषरीपुहूपावलिसी
अलकावलीधारचोयेंअपकी तरुनाईउनाईअ
नूपनिकाइमुबारकपाउबडेनपकी ज्न्वकैंमुरि
हेरननैननकीपलकैंपटभीतरहैअपकी चटकी

प्रमोद च वा म धा वदे प
ठ लं स्री सा र का द तव द

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लीतुभीचितवागुरिआग्रिदुंआगुरियांगुरियांजपकी
१५ ७९ जबतेंकुवरकांन्हरावरीकलानिधांनवाकेकांन
परिकहुंजुजसकहांनीसी तवहींतेदेवदेख्योदेव
तासीहसतसीरीझतसीबीझतसीरूसतरिसानी
सी छोईसीछलीसीछीनलीनीसीछकीसीछिन
जकीसी८कीसीथकीलागीथहरानीसी वीधीसी
विधिसीविथरूडतविमोहितसीवैरीवरुवकति
विलोकितविकांनीसी ८० आखिनदरततारेआ
खिनलगतपलआखिनलगैरीस्यामसुंदरसलोनेलै
देखिदेखिगातनआयातनअनूपरसभरिभरिलेतरू
पलोचनअचौनसे हेरीकहिकोसोहैंकहाहौं
कहाकरतिहौंकेसेवनकुंजदेवदेखियतभौनसे
राधेहौंसदनवैरीकहतिहौंकांन्हकांन्हहाहाक
हिकान्हवेकहांहैकौहैकौनसे ८१ महरस
हरसोंधौसीतलसमीरडोलेथहरथहरथनघोरकै
थहरिआ ठहरठहरजुकिठीनोठरलागोदेव
छहरछहरछोटीबुंदनछहरिआ हहरिहह
रिहसिझूलतिहिंडोरैंचढिथहरथहरतन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोमलयहरिग्रा कहरकहरहोतप्रीतमकोपी
तपटलहरलहरहोतप्यारीकोलहरिग्रा ८२
मूरतिजोमनमोहनकीमनमोहनीकेथिरहैथि
रकीसी देवगुपालकेबोलसुनेछतियांसियरा
यसुधाछिरकीसी नीकेंउरबोनिजाकसकेनहि
नैननिलाजघटाधिरकीसी मूरनप्रीतहीयेंह
रिकीबिरकिबिरकीनफिरेफिरकीसी ८३
रूउतनगातगातवीतग्रायोग्रधरातसोरसवगुर
जनजांनकेवगरके रूपकेछवीलीग्रभिसारकेक
वारबोलेबुलगएगंधसवचंदनग्रगरके देवकवि
भोरगुंजगुंजग्रारकुंजनितेंरूछरूछपाछेपरेपा
रूबगरके देवताकीदामिनीमसालकिधोंजो
नज्वालउगरेंमचतजागेसगरेनगरके ८४
नायहनंदकीमंदिरहैवृषभांनकीपोरजहांजक
तीहो होईहहांकितुहेकहिदेवजुकोनकीघू
घटकेतकतीहो भेटतमोहिमहूकिहिकारनकौ
नकीधोंछविसोंछकतीहो कैसीभईकीकहौकि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१५ नकैसेहैकान्हकहाहैकहावकतीहै ८५ बातकही
सुकहीवलिवेकीललावडुरैठौरमौनहिग्रानवी
ग्रांसूचलेसुचलेचलिवोसुनिग्रूवग्रौप्यासगईप
हिचानवी औतुमजानकहोगेग्रचानकदेवजु
सोनिहचैकरिमानवी ढूंढिहैप्यारेकपूरलोग्रा
नसुयातनमेउडिजातनजानवी ८६ संगसोवत
हीपियकेसुषसोंसुषसोंसुषसोनवियोगसहे स
पनेमहिस्यामचलेजुविदेसविथाकविदेवकहा
लौंकहै तियशेयसकीनसुनीससकीहसिप्रीतम
स्यौमहिंग्रंकगहे वडभागीललाउठलागीजउति
यजागीतउहिलकीनरहे ८७ ग्रंगुलीग्रधरद
लहलतसकलकलग्रलिकुलकलितकलपल
तकलिका कैधौंमहामोहनीकेमंत्रकीनिधान
मुनिदेवनरनारिनकेचितनिकीछलिका रज
तियप्राननकरतितकताननग्रनेकसुरगाननके
बाननकीनलिका कुंजकुंजगुंजनगरूरगुनपुं
जभरिराजतरसालीवनमालीकीमुरलिका ८८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

साहसकेहसिकेरसकेमिसमांगीविदेसविदा
म्हडुवांनिसो सोसुनिवालरहीमुरझाइदहीव
रवेलिज्योंधीरदवांनिसो नैनगरोहियरोंभ
रिआयोपैबोलिनआयोकह्वासुजांनिसो
सालतिहै७रमांहिगडीवेवडीअखियां७म॰
डीअसुवांनिसो २८ सीतलियोइनहीसिग
रौजगवातडुहैसवजाननजानहै पांभुरीमै
कैहीगातकहाडुनहींसौंगिरीसगमायोगुमा
नमै देखौविचारिनतुंमनआपनेऔरसौंजी
त्योकौंजातजस्यांनहै भूलिकैंफूलकेकोउ
कहैतियतेरेईनैनएमैनकेवानहै ९॰ चंद
मईचंपकजरायजरकसमईआवतहीजाके॰
गलीकमलमईभई कालीदासमोदभएआ
नंदविनोदमयलालरंगगईभईवसुधासुधा
मई येसीवनीवनिकसुमदनछकाइरसिकाउ
कीनिकाइलखिलगनिलगीनई केलिकौं॰
हितैकरिगुपालेमोहितेकरिसखिकेदुचितै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करीचीतैकरीचलीगई ८१ कुंदनकीछरीश्राव
न्हसकीछरीसोमिलिसोनजुहीमालकैधौंकुवलयः
केहारसो किधौंचंद्रकलिकाकलंकसोकलितभ
ईअनलकीज्वालजुरिगईपमधारसो कालिदास
कोदवनीदामनीमिलीहैकैधौकैधौरतिललितवलि
तमइमारसो केलिसमैकामिनीकहूइयासोलपटि
गईकैधौलपटानीहैजुहैयाग्रंथकारसो ८२ दंप
तिसुरतिविपरीतकोरमितमतकोककेकलानिके
सकलअवधारिहै मनतसुलालविहसतवतरात
सरसातअंगअंगनिअंनगरंगभारेहै उचटोलिलार
तैसमेतवेंदामोतीमांगरेसेकेसपासतैपरतउरडारेहै
वदननछत्रयुतिछत्रपतिहुकमतैतमपैकतारैवांधि
कूदेमनौतारेहै ८३ छपाकरछत्रमोतीझालरन
छत्रआलीपलकेप्रकाससंघासनकेसमाजको क
हतकविलालचारुचउरकीचलनवालविछरतहा
रहीयेअछितइलाजको सरपइलापउवरतउच
वेदमंत्रकिंकिनीसाधेसुरनौपतनवाजको किधौ
रजराजविपरीतकोसमाजकिधौंरजअभिषेकमन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मत्यमहराजको ८४ जमनाकेआगमनमारगमे
मारुतसौंजनैमोरभीरनपटासेलिखिआऐहै संत
नसुगंधनकीखानपदमननतेरेरूपकीतरंगनिचनग
वरसाऐहै वाहरकवनतोसौंकहैसोइयानीसोता
लेहैवदनामीघरघरघेरछायेहै पटकीलपटते
रेलहरनिवादिनाकीमानोइनगलिनगुलावछि
रकाएहै ८५ अंगकीसुवासआसपासरासमंडल
केदेखियतभोरनकीभीरभारीमोरते संतनसुकव
लौनैलंककीलुनाईलखलखकतअरोजतैनितंव
ककोरतै पाइनतेधुलीदरदामिनकीनारीमोत
नकीसारीजरतारीओरछोरते स्यामघनघटनते
निकसतनिसंकमानोचंदमुखचपलानघेरोचहुंओ
रतै ८६ वेठीतीयागुरलोगनिमेरतितेअतिसुंदररूप
वसेषी आयोतहांमतिरामसौयामेमनोभवतेवढि
कोतिउदेषी लोचनरूपपियोइचहैअरुलाजनिआ
तिनहीकविपेषी नैननिवायरहीहियमालमेला
लकीमुरतिलालमेदेषी ८७ गोनकीरैनअथौने
नहीजवप्रातललापुनिघातलगाई प्यासलगीको
उपानीलेआवोभीतरवैठकेवातजनाई जठानीप
ठायदईदुलहीहसिहेरहियेमतिरामवुलाई कोरू
कोवोलनकीनोनचितसोगेहकीदेहरीमेधरिआई ८८

१८ सकलसहेलनिकेंपाछेपाछेडोलतेंहैंमंदमंदगौनउप
कोरेंहीकरतुहे सनमुषहोतसुषहोतमतिगामजबपें
नलागेंघूघटकोपटउघारतुहे जमनाकेतटबंसी
बटकेनिकटनंदलालकेसंकोचनतेंचाहनपरतु
हे तनतीतीयाकोवरवाउरेभरतमनसाउरेवदन
परभाउरेभरतुहे ९९ किधौंस्यामघनमेंप्रकास
हेप्रभाकरकोकिधौंअंधियारीनिसआभामथइंदकी
किधौंसुरगिरकेसिषरपरद्वैउजारोजमनाकेज
लमद्धआईअरविंदकी कालीकेकपालपरकेसो
केपरमपदपंनगकेमाथेंकिधौंमनिहैफनिंदकी
तेरेसीससीसफूलऐसीसोभादेतआलीमाननीके
पायपरस्यरतगुविंदकी १०॥ वेनीनेनरोमावलि
यहरंगकालमाहैंकहतकलेकमूगएतोभोरेवा
रेहे तरवाअधरनषअंगनवगनआभासांजसमेंप्या
रेलालदेषिरेंउघारेहे चाहिकहारहेहेप्रकास
केप्रकासहरिताहिक्योंनचाहेतासोजगउजियारे
हे प्यारीकेवनायविधधोएहाथताकोरंगजमभ
यौवंदाहाथजारेभएतारेहे ११ फूलतपाटकी
डोरीगहेंपुतुलीपरवैठनितेंउकरूकी पाहुनतेंदु
मनीमचकेलचकेकटिकंपनगोरउरूकी सीषवे

कोंवपरीतमनोरितुपावसतैचटसालसुरूकी
चोटीपरहै ७ चटैतियचोटीचमोटीलगेमनो
कामगुरूकी २२ वांसुरीफूकिगइहैतोयाहि
तेफूंककेमेनकिआगजरा७त वेरहैसातकहै
दीगईहियेंछेदतयातेदयानहिआवत आपग
ईअरुओरहीबोयेदईयहजाहरकेकहनावत
ज्योंवडेवंसतेछूटिहै आपहीत्योंवडेवंसतेओर
कुडावत २३ दीयाकेउआरेंतीयादूधसीयाक
रतिहै आसपासआनवाकेंवामनझंभीरकी लों
नाहूतेंकोमलसलोंनीअतिलागतहैं गोनाहूतें
आईमानोजाईहोंनाछीरकी कासीरामरसन
रीरूपभरीवाकेंधुनकांनपरीवंसीवलवीरकी
लागीमानोतीरकीगिरीरहीअहीरकीसमार
नासरीरकीनचीरकीनछीरकी २४ जमुना
केकूलकूलपनघटशेकरहेकारूतजीकुलकों
नभूपलाजवरकी रागनकीवांनसाधवांसुरी
मोभरीतांनफूंकदेवजाईओचलाईकामसर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

18

१८ की सुनधुनपसुपंछीवीथेठौरठौरमल्लगोकुलकी
कुलटांविसारीगैलघरकी गागरकोअरद्वारप
निहारगौरीलोटपोटलोटतकसूतरजोंफरकी १०५
सोहतग्रकेलीग्रलवेलीवृषभानसुताल्याईकर=
गोरसगुमानभरीजटकी मृगमीनखंजनकमल
सरमधुहारेचीतानुचकतभएदेखछविकटकी
ग्रावतहीग्रीहकोमहिपतकुवरप्यारीताहुता
नकानपरीवंसीकान्हनटकी सम्हारनाहिपट
कीरहीनसारघटकीचहुंचोटचटकीसुपटकअ
रीमटकी १०६ ग्रापहेंग्रकेलीग्रौरएकहेसहे
लीसाथबोलतहेंवानीयोंभुवानीज्योंसुधामई
कोउसखीकरेंवातकोउरीभदेखेंगातकोउकरैंग्रा
गेंहाथठाढीपानहेलई ग्राएवनमालीयातें
ग्रतिहीषीसालीरसवंसरीवजाईसुधवाकीभूल
योंगई जैसेंमतवारेग्रौवामरेकीलागेतटपान
रह्योहाथमौचनौदीमुखमोदई १०७ देखादे=
खीभईसकुचसवछूटगईमिटीकुलकानकहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घूंघटकोकरवो लागीटकटकीगतयौंमतथकीला
गीथकधकीकहानेहकोउघरवो चित्रकेसेकाढे
दोउ ठाढेरहेकासीरामकहाकहुनेहकोप्रवाह
राहकरवो वंसरीवजावोनटनागरकोभूलग
यौभूलिगयोनागरीकोगागरकोभरवो १०८
एकडोरवीजनाडुलावतहेचतुरनारएकग्रोर
झारील्याईजलपानकी एकतोघुग्रासनघुलाव
तहेपानग्रानराधेमुखवोलकिधौंलालीतरतान
की वाहीसमेवंसरीवजाईनंदनंदननेसुधहेकै
ग्राईविंद्रावनकेलतानकी वामेगिरीनीरग्वारी
दाहिनेसमीरग्वारीपाछेपानदानग्वारीग्रागेव्र
षभानकी १०९ द्रिगलालविसालउनीदेकछु
गरवीलेलजीलेसेयेंषेंहिगे कवधौंविथुरीसुथ
रीग्रलकेंउपकीपलकेंग्रवरेखेंहिगे कवसंभ्र
सुधारतिभूखनभेदविलोकनयेंजगलेखेंहिगे
ग्रंगिरातउठीरतिमंदरतेंकवभोरहिभामती
देखहिगे ११० तनतोतुरंगतेरोकंचुचारजामा
कीहोलालरेजकोरमोतीपसवंदमालहे पाय

२५ लहंवेलवाजेजुलफनकीग्रालसाजेवावरेहैदोउ
कुचग्रंगवारसालहै साकतकेवंदहूकेंकोकि
लासीग्रापकुकैभनेवलिभद्रमागमानौसर
ह्मालहै कलगीकीनोसीसफूलताकोकेंनमा
लवंदवदनसरोजमइवेसरदलालहै १११
छुटछुटपरतवेंदीग्राजसषीरीमुहपरतैवारवार
मोतनकीलरीलरकतुहै चूराहूकीकीलप
गधरतहींानकसजातजवकवगांठजूराहूंकी
सरकतहै ग्रागमभयोहैकिधौग्रावतहैग्रा
लीग्राजसुनसषीउसकचेरोजनसोंग्रगीदर
कतहै तनीतरकतकरचूरीकरकतसिरसा
रीसरकतग्रंचवांमीफरकतहै ११२ करत
कलोलकीरकोकिलाकपोतकेकीचांदकेंवधा
ईवाजैजानैजनघनधुन सुकविसुमेरमीनम्र
गजमरालमनमुदितन्योतेमेनकासकलसु
न केसरकहूंरूकोककदलीकमलफूलेसो
तनसजेहैचीरचारुचुनचुन कहापटतान

प्यारीपोठीहैविलोकोग्रानचारोग्रोरचोचन
मचौहैतोहिरुसीसुन ११३ केसनिसेसससी
सुषकिछविंम्रगनिमोंद्रिगसोंम्रगकारे की
रकलापिकगुंजपयोधरसिंघकपोतगजिंद्र
वडारे जीवनिजीवदलीकदलीग्रलिहैंच
लिवेगविलंवकहारे मोसोंपठायरसायक
सोकहिएतेहीतोपरग्रानपुकारे ११४
ग्रापिनीठौरतेंचाहेंलिख्यो लिखिजातक
याहितमोहनग्रोरकी प्यारीमयाकरवेग
मिलोसहिजातवियानहिमेनमरोरकी
ग्रापहिलीखेलगावतिग्रंगकहोकिनग्रो
नीचिठीचितचोरकी राधेकोराधेलगीजक
मोरसोहेरहीम्रतिनंदकिसोरकी ११५
ग्रावतहेग्रनसग्रनोषीवातेंसुनसुनतपत
सरीरसवदेहजरियतुहे केंतोनिसवास
रकरतकेलिकुंजनमेंकेंतोग्रवकुवजाके

२० पायपरियतुहै हियेंहून चाउ मोरे सुन सुन के
सोंराहदासीपटरानीलैकेराजकरियतुहै उ
धोजीतिहारीसौंकहाकहेंविहारीजीकोंमामी
भायकोमरैमरोवैंमरियतुहै ११६ जाहिकुं
जपुंजरसगुंजरतभोरथाकेताहीनरवरतर
अवसीसधुनियतुहै जाहीरसनासोंमिलि
कीनीरसकरसीलीमातेंताहीरसनासेंअ
वओगनगनियतुहै मोहनविहारीविन
हिरदेंअचेतभईअहोदईहेसखेतऐसेंसुन
यतुहै जेईकांहूनैननकेतारेहूतेनिसदिन
तेईकाहूकाननकहानीसुनीयतुहै ११७
मेंदईचयतईंडुवधुसेवनेहोतप्यारीकेचरन
नवनीतहूतेंनरमैहै सहजललाईकासीरा
मवरनीनजाईवईसीपरतवाकीमतदेखैंभर
मै नवनागरकीनायनजवरेंजीछूऐंईगर
सोरंगदौरआवेदरवरमे दीओहैकिदीवे
हेविचारेसोचेवारवारवावरीसीहैरहीमन

परीलैकरमै ११८ बालदसाजुवतीतभई
तवव्याहरदुवरकोनलजावै चंचलचाऊस
रोजमुषीपटग्रोढनजावतवेलहिभावै भा
वनीवातकहैसुषसेजकीताहिसुनीचितयोही
भ्रमावै कैसैमिलैपियसोडरयेदिनरूडनही
जिश्वरूडलग्रावै ११८ मंदमंदहसनेंग्रोमंद
हंकेविगसनेंइंदुतेंसरससोदरसग्रानदेगई
कंचुकीकीकसननिकसनदोउकुचनिकेहार
कीलसनछ्बछातीग्रापछ्वेगई लोककील
चकफूलफांकसीफिरतकहेकविरूपचित
चेटकसोकैगई ग्रांषिनकीजोरनसोसुरत
सकललीनीमोहनकीमोरनसोमेरोमनलै
गई १२० चोरीसीमोरीसीवेसलसेनहसेग्रत
सुंदरहैसवहीमै सौंपसबीलयटीदुततेंदोउ
हाथरहैचुनरीदवहीमै देवभईदुहरीति
हरीतियग्रेंचगहीकरतेजवहीमै रोवत

२१ जातहेंरहिलकीनसोंगातलगाउलईतवहीमे
१२१ खेलनसंगकुमारकेसुकुमारकहूसकुची
मनमाहीं कामकलाप्रगटीअंगअंगविलोक
हसीअपनीपरछाही अबमनमैनरहेउरअं
चरलेछिनहीछिनचंपतवाही जारतहेशि
वकेसिरअंबरमानोढिंगवरराषतनाहीं १२२
सुंदरसलोनेरूपरासकेदिरोनेतिलवारों
मृगछोनेजोरकोटकघुमरमे कवयरवास
मोहियहेतोअचंभोलागेविनहीकटाछकां
मआवतभुमरमे मेरोमनमधुकरजानेहे
कमलमोतेरेनैनसंपटमूंदेसुरतासमर
मे तेरेकुचसंभपरकरधरोंकहोसांचरे
सेनैनमेनदेखेआपिनीछमरमे १२३ मृ
गतेसरसहेविराजतविसालदृगराजतनऐ
सीछविकमलनकेदलमे कंजाकवघन
सेलसततनपीतपटराठेउमछाहदेषहे

रसीविकलमे चितऊसचारुपअैासोभा॰
केसमुद्रमाहिरहीनससारगतऔरेंमई
पलमे मनमेरोगऊऔगयोरीवूडमेन
पायोनेनमेरेहुऊएतरतऊपजलमे १२४
वाजनिजिहरविछुअनुकेउनकेसोसनक
सेमुननिकीमत७महतहे यीवाकीनमन
औअरोजनकीतुगताईचादरमेदवीवेनीघो
रीएलहतहे लगनजनावेपगगनगनधरे
येंउयेंउदसभरवोएवडीअजलतहे एसेंकटि
लचतनतवनेंसतवनासोमेरेजोनजेंघन
टकेलतचलतहे १२५ चंपेकेसेचारफूल
चमकतभुजमलदेहकेदकूलफोरेंऊप७क
नातहें गंगकहेलोइनमदनमदकोरेभोरेव
दनकीओरकोंचकोरललचातहे मातेहाथी
कीसीगतिरातेसोनेकीसीदुतिरातेकरराज
तकमलकेसेपातहे मृगासेअधरदमकत
दांतदाडमसेऐसीयेग्वाऊनकेघालेघरजात

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२२ है २२६ झलकतजावककीवाहीकीललाईला
ललालसिरपागझुलसतभाललटकी ग्वारसक
लतरसरंजनरसीलीउदित्हैहैंइइकटकनिस
चंदहूसौझ्रटकी कंटककीरेषनषरेषलैसीदे
षियतकहूंकरकंजनकटैलीबेलझुटकी का
डैसोपटपीतनटनागरनवलस्यामकवतेभ
ईहैरुचिज्ञेसेपीतपटकी २२७ चंदछटाछ
टकैं॥ गीम्रटापुरफूलचंपेलीकेफैलरहेंगे
कौलमुषीकलिकेलिकेकूलककवैहियराकिधौं
हूंकभरेंगे सीरसमीरबहैंमनमंदगंधसुगंध
सवैसचरैंगे हारिकवेपरजंकमैझाइमयंक
मुषीभरअंकमिलैंगे २२८ विरहनिलैषि
लाईचौपरचतुरतियचितविहरायवेकोलाग
तविरामके षेलतहूंमागैपापांनीपीवेकोलि
योकरमानोतनजीसोदाउधोबेंधनधामके
जबहीकह्योपीयसुनसुधआईजीयलेहररहेह
रगईभईवसकामके न्यारीपरीजारीग्रापन्या
रीसारीमारीन्यारीकहारीकहारीजकलागीसु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सवासके १२६ मानकीयेवैठीरूतोवातनि
कठेगीइतोहोतकहाआजपियमिलवेकीरा
तहै आलमसुकवि उतनवलनवीनेकान्ह
मोसोंकहिमेरीसखीकाहेकोडरातहै संक
हूनकीजेवलिसुधारसपीजेचलिऐसेनीके
लालनसोंहठक्योंसुहातहै होहुनअया
नीहहासमजुसयानीहोडुभोरनकेभारकि
धौंडारटूटजातहै १३० ससिहैचकोरनिको
भोंरनिकोकोलिमालमृगनिकोनादमईसुद
रसुजानहै केलिकोकलिपतरुसोभाकोस
रतिपतिकामकोपयसखेनकामहीकेवानहै
आलमकहैहोपचरचीहैविरंचिऐसीनेक
हूनदेखलेहुकहातुमेग्यानहै रतिसोसुभा
उअतिनेनकाकेहाउभाउरंभाकेसेरूपसव
गुनकीनिधानहै १३१ कैसेधरैंधीरओझडीठ
रैनानगोडीनिसद्धाडीसुधिगोपीनाथगोकुल
नगरकी कहाकरें विरहनवनकेविहंगवे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रीलागीहीरहतजीभरहैमालगरकी पापीप्रा
२३ नदहेपौंनग्रागनिमेरहैकोनअंगमेअनंगआग
दगेजोदगरकी चंदाकोचितैकेसबैवेसनेचुवा
रैंचलीचरनकेधरेतेचोंकीचोचलीअगरकी १३२
तनमेनसुधविधुवदनीविरहमईकिधोंमधुसू
दनविछरेदिनहैगयो अंगनकीआगतैंअंगी
सीडीढिठीठीलागेमेनरवकरनकरेअंहमेके
गयो ननदकेडरगईगोरसचखायवेकोविन
चूल्हैवारेंवरईधनसवेगयो जोलोहूधकरतें
कराहीमेकरनलागीतोलोसवेदोहनीमेडों
टिघोआहोगयो १३३ जमुनाकेतटवंसीवट
केनिकटआजुपनिवटभेटभईनिपटमली
भई डोरेंसोधेंसारघनसार७दगारचारुसो
रभपसारभारीभौरअवलाछाई अंगनिकी
जोतिजगमगहोतिकुंजनिमेगुंजनिकोहार७
रदरसैअलीनई आगेंघटवारीपीछेंपीतपटवा
रीवीचलावीलटवारीलगलागतचलीगई १३४
मंदमुसकातहैसकातगुरलोकनिसोंचितवें
असीसीनवहरनीजेंजालकोमोहकीमचन

गुगनैननकीनचननाथकुचकी ७ चनैयेह
लेनमोतीमालको अ्रचलचनत्यौंहीभुज
कीतुलानकछुकेठकीमुरन ७ छरनकरताल
को सखिनकोटेरतमनोजमनघेरतचकरी
नफेरनअ्रहेरतहेलालको मादिनतैंगोकुल
गोपालजुगमनकीनोतादिनतैंदईयादुखदेहद
रसतहे ७तरतचढलुअ्रटारीपोरपलपलपर
मसनेहीप्रभुयथदरसतहे अ्रविधिविसारीक
होउधोवनवारीजुसौंकहाजियधारीनसम्भारी
हरसतहे दोनोकरजोरकीजोविनतीकैरोर
मोरहदेवसतहोयेनैनानरसतहे १३६ त
प्योतेजतऊनअ्रोतरलसमीरतप्योतप्योमहि
मेरजुदावासोजनाइये तप्योसरसरिताअ्रो
अ्रकोसपुतपतभयोसीतलगुलावघनसारघ
सलाइये अ्रतलवितलजीवरह्योजलथल
माहिपंथहूनचल्योनसंदेसोकछूपाइये
मनतविद्याधरतहांप्रीतमपियारेविनग्रीष
मविषमदिनकैसेकेविताइये १३७ किधों
इन अ्रलिहूकेनलिनमेनिवासकीनो कि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

धौं कुह नाग है कै लता लपटायो है किधौं यह प्या
सो ह्वै के कूउयो है सरोवर मै किधौं विंब गिरवर के
मध्य मे दुरायो है इंदुयौ नाभि सरवर ओगिरव
र कुच दुंद्व है हम दृढी रोमलताने ननलिन सु
हायो है ऐरी सखी मेरो मन तेरे तन लपट रह्यौ है
रहे रहा ओये पेन काहू तैन पायो है १३८ सरद
की पुन्यो चंद सीतल पवन मंद तहां वैठे नंदनं
द तेरी इतो वात है कालींदी अलोल तहां काम
की कलोलें स्याम तोहि स्याम वोल के तो मोह
सो रिसात है कीजिए गमन अवराधके रम
न तोसी औ हे कमन चित चांदनी ही रात है
वीते जे हें रेंन रस रीत जे है प्यारी विन अरवीन
कर प्यारी परवी सी जात है १३९ हियातु वे
हित तें पै चित तें न आवें चित मैं न मुरे दरसे ते
निरखत लजात है अधर न मुसकान मुरे
माथे कै सलाम मुरे सजनं तिं भीड गल लात
है पगतें डग मुरे जो डोलत फिरत पाछें रसना
सों रस मुऊयो जाकी मीठी वात है भनत ग्वना
मुरे जव इ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लसुरेकोसुभावऐसोतनकमनसुरेतेऐतेसु
रेजातहे १५० जवतेंव्याकुलभईचंदमुखीसू
कगईबालमविदेसनामचलवेकोजोलयो दु
मपुंगीफलरूपद्वयाधर्‍योघालीमोहिपुत्रहूं=
केभालमतिटीकोरोरीकोदयो तंदुलविसार
आईवधकोकह्योत्यों तपतपसीनापानीत=
नमैतथेगयो अछतलैआंईआनआंगनमेठा
ढीभईकरजोपसार्‍योतोलौभातहाथह्वैगयो
१५१ अनूपरूपभांतिहीसषीनसंगजातिहीक
रपानषातहीसरूपकेगुमानमे कहीप्रवीन
स्यामजुवनायवांसुरीसजीवसंतरागमेवजीपरी
सुतानकानमे सुरंगनाहिदेहकीसम्हाल=
नाहिगेहकीचल्यौनजाननेहकीसुथोरहीन
प्रानमे नचीरकोसम्हारतीसुनैननीरढारती
हरीहरीपुकारतीहरीहरीलतानिमे १५२
उधोल्याएपातीविरहनभरआएछातीदोऊली
फनैननकेमुतियनसोभरउठी व्याकुलहो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२५ दौरीनारपातीछैनचलीछार उधोनामविसरगयो
हरहरकर उठी येतेमेसदेसादीछोविरहमन
मानलीनोतेलबूंदआगपरभरभर उठि डाढी
भईपाटलागछाडुगईविरहआगपातीसीहाथ
लीएवातीसीवर उठि १८३ जोगकीवसीठीका
हपैनलागैमीठीतातेधरराषो उधोऐसीची
ठीदीजियतुहै हमतोव्रजवालाकैसेंउठैम
गछालाभूषन उतारसुषकारोकीजियतुहै
येतोव्रजवासीजिनरानीकरीदासीजाकीदेस
देसहासीकहोकैसेंजीजयतुहै कुवजासोंर
हैरातेधोएउरेनेहनातेवांदीकरीवीवीहमे
डीवीदीजियतुहै १८४ उमडउमडिचलैका
हकेनकहेरैहैओईजानेसोईकहेहेसीविफरति
है हेगईहैवीरीपानीपानकेनहोतिनीरीछिन
कमेसीरीछिनआगसीवरतिहै यकीसीछकी
सीछिनजकीसीजकरिसीसुंदरधरधरातिछती
धीरनधरतिहै जादिनछवीलेकेतीछनईछन

देखेतादिनतैंछिदकेंजवछंदनिकरतिहै १८५
तजलाइकलोचनसायकसेभुवभायचीतैचि
तचोरलियो करखेंकबरीकुचकोरकसेपरिरं
भनचपसकंपहियो बिलसैनविलासकहाक
हियोविविधामनबुद्धिविचारकियो दुगधा
दधिमथमुष्यास्रमकेमुगधामुखचंदसुधानपि
यो १८६ सरसमयंकमुखीकंपतसरोजजैसे॥
दुखीसीरहतअरुप्रीतनचहतहै दिनमकीया
रीगोरीभोरीअनबातनमैनीबीबेंचबांधेंडोरीचो
रीनवहतहै कहतकविनाथदिनदूडेंमनरूउ॥
आयोसासननलायदोरपाइनिगहतहै याहीअ
भमाहीपियानगहोंनाहीहमनाहीहमनाहीप
रछांहीसांकहतहै १८७ सीतलसमीरटारचं
दचंद्रिकानवारकेसोदासरसोहितोड़षेहीरा
तुहै फूलनफलायेंडारजारडारघनसारचंद
नकोटारचितचोगुनोफीरातुहै नीरहीनमी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१६ नमुरझावेजीवेंनीरहीपैछीरकेछिरकेंतेंकहाथीरज
धीरातुहे पाईरहेतोपीरकिधौंयोंहीउपचारकरे
आगहीकोदाधोअंगआगिहीसीरातुहे १४८
मनगयेदनिसाथसदाइनथावरजंगमजूथवी
दाऊयो तादिनतेंकहिकेसववेधनवंधनकेवहु
धाविधिमाऊयो सोअपराधसुधारनकोइनसोधि
केंसाधनसाधुवीचाऊयो पावनपुंजतीहारोही
यौयहचाहतिहेअवहारवीहाऊयो १४९
चंदनसीमधुगंजनसीकुवजाथसिचंदनकोनि
तल्यावे चेरीकोचेरोभयोनंदलालहमेछुडि
केंकुवजाविरमावे उधोजिकहाकरिएमरि
एविषषाययहीजियआवे गोपिनकीमुहरैन
चलैकुवजानितचामकेदामचलावे १५०
प्रानपतिप्यारेपासप्यारीकेप्रकासवैठीऐठी
चितवनवारीकोउएकआऊयो देननिसुक
विताहिदेयतमयकमुषीआसनदियोहेटरि

सादरबुलाइयौ बैठोनेकबीरजाउसीरके
सदनमाहिसीतलसमीरसुमसीकरसुबाइ
यो इंदीवरनैनीहोंकलिंदीतेअन्हायआउतो
लोनंदनंदनकोबालननलगाइयो १५१
शिवकेठबनैसेहूतेहमकोसबकोउकिंतीअ
नरीतीकरै हमसासकेत्रासनजेवोचहैयह
जीवसुतोसबसेतीडरै सखिकोउनहीवरजै
घरकेयहवैरनीतोपरतीतीकरै यहदारुणि
नदहूहैघरमेरजनीसुषगागरीरीतीकरै १५२
आवतसघनघनघेररहैचारोओरहूजेंदोर
दामिनीउत्रावतकुवेसए दाईएकअधरीसी
देषोवहकोनैपरीकानहूनसुनैअरुबकुत
कलेसए बैठीयेसहेलीचंदआपनीहवे
लीजायनिपछुअकेलीहोभवेलीरहोवेस
ए पतिसोविदेसतुमयथिकविदेसजेहो
मिलैकहीदेसताहिकहियोसदेसए १५३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स॰ काहू हीं चेलो वनाइ कैसं भुगई वृषभा
नके भौन गुसांयन ॥ देखत हीं जु रि
आई सखै गाहिं डारी सहेलानि राधि
कापांयन ॥ भेटि ली यो भारब्रं क
म ह्वै ब्रौक ह्यौ रचि हौइ हहे तरपा
यन ॥ याही इकंत लै मेत्र जयौं जि
ह होइ वडे ब्रजकी ठकुरायन ॥
ससकि ससकि हियें कसकि कसकि उठैं याही
अवसोस हों कढीना भौं नकौं नैसौं लागीए
कतान मुकतानि के अनेक हारि वकसु द
राज कहूं रूपैसो न सौंनैसो भनत कविंद
यैसे नाहु सौं गुनाह विन कियो मैं बिगार
यारटारे किहु टौं नेसौं एरीतै कुमति
मोसों कलह करायो अब सुलह कितावैकौ
नसामरेस लोंनेसों १५५ वालको

28

लाल विलोकि विलोकि सषी वि
लषे न लषे चित चायन॥ जान ग
ई धन के मन की छल सो छल केलि
दयो कहि नायन॥ द्वार घनी मह द्री
पिय के तौ कहा नहि जाय करी जिए
पायन॥ सासुरे जात भई दुचिति सुचि
ति कव होहगी मेरी गुसायन॥१५६॥
चंदन पंग गुलाव को नीरस रोज की से
ज वछाय मरोसी॥ नूल भयो तन जात ज
रो यह वीरी दकूल उतारि धरो री॥ सिंघ
जू कूठे उपाय सबै यह मोहन सार के
भार परोरी॥ लाज के ऊपर गाज परे
बृजराज मिले सोई लाज करोरी॥१५७॥
तरकन भावन है प्रकति हारी सों है
का हैतें विहारी निज निज तन हारे हो
तन मन धन तिन पर विलहार करो जि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नकेसमीपतुमसुखसोंविहारेहो जैसेंतु
महमकूंकोंविछुरेसुहातुनांहितेंसेंतुम उ
नहूंकोभावतनम्हारेहो जीवनकेजीवनह
मारेप्रानजीवनग्रोजीवनतिहारीतुमजी
वनहमारेहो १ मदिरासुगंधकेसेंदुर
तदुरायेलालरंगतोप्रगटहोतग्रधरद
रीकोहै कालिदासकोंकूप्यारेनेहलोन
गोजेयहदुरेतोमलीनहिप्रगटहोतफी
कोहै तुमतोलगायटकदेषतहोलोगन
मेकोउलखजायतोजंजालवडोजीको
है विहसनबोलनविलोकनविचार
देखोसमेपायग्रोसरकोसवेकुछनीको
है २॥वरखतनमेधनस्रवतमदघटानि
मेदामिनीदमकोसिरभूखनप्रकासकर॥कारे
कारेत्रातिहीडरारेनरसतयारेस्रवनसमीर
हकहोरतजतरलतर॥पंडवकेपूतनसो

कीनीप्रीतप्रानननाथ जानिकै प्रनाथ वैर
लीजतप्रनाथवर॥ जोई राजभाग्य मै
भरमाए भीमसेनजेई प्रवराजतहैगो
कुलनगरपर ३ खेलतिफागुसुहागु
भरीसुघरीसुरअंगनातैंसुकुमारिहै जै
चलेप्रठलेये ७तैरलकांकूसरीरसभान
कुमारिहै संभुसमूहगुलालावकेसीस
नढारिकैकेसरगारिविगारिहै पावरी
पांवडेहोलजहांतहांकोललाकामरीये
रंगुडारिहै खेलतीहारीकिसोरीजहांजि
नयेरतिरभागईसबहारिकै सोथेंतहांस
नियेहरिजायेजहांजनिरकुंडग्वारिगवा
रिकै संभुसरोजसेपानिसुजानगहेपिच
कानगुलावजोगारिकै सोनभरालक
रंगीललाकमरीपरकैसरकोरंगुडारि
कै क०॥ करनकेविक्रमकेभोजकेप्रवंधदेखोकै
सीभांतिकविनकोआगेलीजियतुहै कविमति
रामरामनजिलिसकेसिंगारजिनकेवचनसोसु
धासोपीजियतुहै ऐककेगुनाहनरनाहसौउदोत
वेदयुतोकहाकविनसोरोसकीजियतुहै काहूम
नवारेऐकआंकुसितमानीकहादुरद्दरवारतेवि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उारिदीतियतुहै ५ अफूलितवागकुंजमलयकोप
रागपुंजलावै पौनओपसीचढावैउजराउमै क
हैकविसिंतामनिसाधमध्यजैसीमनोरासिघन
सारकीसघनअगनाईमै दूधकैसीधाराधोरी
धरामोपसारीचंदवाढोतेजकंदरपकुटिलक
लाईमै ओरहूंतियाकोकैधोमेरोमंदभागिनि
कोकंतपरदेसहैवसंतकीजुन्हाईमै ६ उरिय
तुयातेउठिभागिचलुभीतरकोतूहैमृगनैनी
उतकाहूपरदेसरी पूरवदिसाजोगिरिताकी
कंदरतहूतेसोईकैउठोहैछायाकररोस
भैसरीरी स्यामतानदेखियतुछुधासोनि
कलिगयोहैनयेनखनपैलेमुकतासुवेस
ग री नमैसराजताकेकुंभनविदारोवनगग
नविहारीरीतुखारकरकेसरी ॥७॥
विनयितपावसकलिंद्रीतेंवढीहैचाउंचेोगनो
चढीहैसिंधुघटतरसायकै हौनईनदीहोंना
कलिंदीहोंनदीपतजहतुमसोंकहतभेदआप
नोसुनायकै राजागजसिंहजूकैमारेगजेअ
रिभागेरानीतिनकीपरानीसैलेचढीविललो
यकै तिनकेदृगनतैसकजलसलतहीहुउम
डिउदंडकैमिलीहोनोहेआयकै ॥८॥ करनके
विक्रमकेभोजकेप्रबंधदेखेकैसीभांतिकविनको

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

30

ग्रांगलीजियतुहै कविमतिरामराजमजलि
सकेसिंगारजिनके वचनसोसुधासोपीजि
यतुहै ईषकेगुनाहनरनाहसीउदोतचंद
येतोकहांकविनसोरोसकीजियतुहै कांइं
मतवारेयेकग्रंकुसिनमानीकहादुरदसवा
रतेविडारिदीजियतुहै ८ जवमदमातोतव
राजाग्रउरंककहादीनीजवदेहतवमयग्र
उनिरमयकहा ग्रनुभोकेग्राइवेकोपयो
ग्रनपयोकहाहितचितजववांध्योतवगा
रीगरलोकहा निपटनिरंजनकेभेदनन:
येथकहासमरसब्रह्मभयोउचनीचतोक
हा मित्रलवोमित्रकोतोनरकग्रउस्वर
गकहादेखवोदरसतवगोरोसांवरोकहा॥
चंदद्युतिमंदभईफंधमेफसीहोग्रान
दइननंदकरेगीछाउगालकीभुजा
नेहो॥सासससतरेहेजेठपतनीलूसेहे
वंकवचनसुनेहेकसोजोरेजुग
पानहे॥सोलोगिनतीग्रोविनती
हाहालोदेवृकरयोकहाचाहतरेह
नकुलकानहै॥दानदेरेजीकोनदो
ननीरदईकांऊमानलेरेग्रानघरव
सेवरजानहे॥१॥

कवित रविकोसिषावैकोनजगमेंप्रकास
कीनोंचंदेऐसिषावेकोजसीमराईधारि
वो नाथस्त्ररवीरनसिषावैकोनरनरं
गचंदनेसिषावेकोनतपतनिवारिवो
नुहीतरवरनीसिषावेकोनछायाकीवेकु
टिलकरयाछनेहनेननिनिहारिवो दाता
कवसीषेदानरीतवटसालकोंनासिधनि
सिषावैगजकुंभनिविदारिवो १ श्लोक
मक्षायायेचपीरास्तदनुचहिलसेकाकरे
वाविहारेगौडेडिल्यांमनेरीतदनुचमहिमा
संस्थितेचंद्रघोरव वालेमीयांवगाडीहि
तिजनब्रह्मित्रिधालिष्वाचाजमेरीपीरास्तेद
स्तगीरास्सकलशुभमिदंरवयरकुर्वतुनि
त्यं २ भवेदाफताबोयदासब्धरवानेपुन
र्देवपीसेथकेंद्रोम्ग्युवीजातेसुतफीलतो
जीहजाञ्जोजरीजर्जेरीदस्तफराजाचिरायुः ३
यदामारुताबोमवेन्मालरवाने मिरीबा
थवामुस्तरीवर्जुपाने उताविद्विलग्नोन्न
रोवम्रहूरगोभवेदीनदारोथवावातिला
ह ४ स्यामघनतनपरविधुसेवदन
परमाधुरीहंसिनिपरजुगुनिजुरीहै
घारिवारेभालपरलोयनविसालप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रउर[illegible]नमालपरखेलजघगीरहै अं
घजुगजाहुपरमंजुमुखानपरसी
पतिसुजानमतिप्रेमसोपगीरहै न्
परनगनपरकंजसेपगनपरव्या
नंदमगनमेरीलगनिलगीरहै प
प्रांनाप्रियाप्रियप्रानदसोंविप
रीतरचीरतिरंगनिकोद्धै का
मकलोलनमेंमतिरामलही
धुनि त्वोंकलकिंकनीकोद्धै
प्रांननकीउजयारी [illegible] मर
[illegible]यरीस्रमबूंदसरोजउरोज
नसोद्धै चंदकीचांदनीकेप
सरेमनोचंदपहानपहारपरे
द्धै

॥ॐ श्रीगणेशायनमः॥ दोहरा॥ श्रीसत
गुरुपदपद्मभजिदेवदत्तचितलाइ
जगतजोतिपरकाशयहरच्योसुघरसुष
दाइ॥१॥ देतअशीसहिंदत्तकविरहोमुदित
चिरजीव॥ जगतसिंहवंधालभअपालक
नेकनसीव॥२॥ रीझवारतिनदत्तकोकरीरु
चिरफरमास॥ ग्रंथरचहुज्यौंसमुझिएपंच
अंगअनयास॥३॥ सोरठा॥ ताकीशासनपा
इप्रोहितरच्योगरंथयह॥ नामधरयोसुषरा
इजगतजोतिपरकाशयह॥४॥ जोतिषिपत्र
विचारसमझ्योचाहतसुघरनर॥ कहिप्रोहि
तउपकारमहाराजतापरकियो॥५॥ दोहरा
याहीपुरोहितवचनकोप्रगटतमासादेष॥
कठिनदेवगिरउलटिजोनरगिरकहीविशे
ष॥६॥ जोतिकहावैनषतग्रहलगनलोक
परसिद्ध॥ ताकैसमुझैजानिएसाइतविहित
निषिद्ध॥७॥ सातवारतिथिपंचादशपरगट
हैजगमांहि॥ ताकेयोगसुभासुभहिंनामक
हैंअवताहि॥८॥ सातोगहहरचिचंदकुज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो० २

बुधगुरुभार्गवसौर ॥ राहूकेतु उपग्रह हैं कह
नगएक सिरमोर ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ सात ग्रहनके
वार आदित मुख हैं सातहीं ॥ नाम हिस्तु भकर चा
र शशि बुध गुरु मित्त जानिये ॥ १० ॥ रक्त रंग रवि
भौम पीत नहूह ति सब जबुध ॥ स्वेत सुक्र अरु सो
[illegible]म शनैश्चर देखिए ॥ ११ ॥ अथ तिथि विच
र ॥ दोहरा ॥ तिथ पुनि तीन अरु हूं त्रि सो प्रतिपद
ते सब जान ॥ नंदा भद्रा अरु जया रिक्ता पूर्ण अभि
धान ॥ १२ ॥ उत्तम मध्यम अधम यह होत ग्रंथे
ऐपाष ॥ अशुभ मध्य शुभ ऊजरे यही दत्त चित
राष ॥ १३ ॥ अथामृत सिद्धि योग ॥ नंदादिक ति
थि सुक्र बुध मंगल शनि गुरु योग ॥ अमृत सि
द्धि यह जानिये कहत पुराने लोग ॥ १४ ॥ अथ मृ
त्यु योग ॥ रवि कुज नंदा सुक्र शशि भद्र जया बु
धवार ॥ रिक्ता शनि गुरु पूर्ण तिथि मृत्यु योग दु
षकार ॥ १५ ॥ अथ क्रकच योगः ॥ सवैया ॥ द्वादश
जो रवि चंद इकादश मंगल मैं दशमी जब होइ
दत्त भने नवमी बुधवार हि आठमी देव पुरोहि
त जोई ॥ दैत पुरोहित वार रवि सातमी सूरज नंद
न छाठि हि सोई ॥ योग करकच नाम बुरो तव पंडि
त लोग कहै सब कोई ॥ १६ ॥ अथ संवर्तक योगः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दोहरा ॥ सूरज वार हि सप्तमी जो प्रतिपद
बुधवार ॥ योग नाम संवर्त्त यह असुभ को ना
शनहार ॥ २७ ॥ अथ नक्षत्र विचार ॥ दोहरा
लिषियत हैं तिथि पत्र महि दन्न नषत सत
वीस ॥ गनियत के तिक काज महि अभि
जित युत अठवीस ॥ २८ ॥ उत्तराषाढा अंत की
घटी पंच दश योइ ॥ श्रवन चार घटिका प्र
थम अभिजित कहिये सोइ ॥ २९ ॥ अस्व
न भरनी कृत्तिका रोहिन मृगशिर आ
न ॥ आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा मघा व
षान ॥ ३० ॥ पूरव उत्तर फाल्गुनि हस्त चि
त्र अरु स्वाति ॥ पुनि विशाष अनुराध अ
रु ज्येष्ठ मूल इहि भांति ॥ ३१ ॥ पूर्वाषाढ उ
त्तराषाढ श्रवन धनिष्ठ ॥ शतभिष पूर्वा
उत्तरा भाद्र रेवती इष्ट ॥ ३२ ॥ अथ नक्षत्र देव
ता ॥ दोहरा ॥ अस्व अस्वनी यम भरन अग
न कृत्तिका जान ॥ रोहिन विधि मृगशिर
शशि आर्द्रा शंकर मान ॥ ३३ ॥ अदिति पुन
र्वसु पुष्य सुरगुरु पन्नग अश्लेष ॥ पित
र मघा भग पूरवा अर्यम उत्तर मेष ॥ ३४ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गो.

सविताहस्तात्वष्टकहिचित्रसुनिवहुभाग
स्वातसमीरविसाषहैदेवइंद्रअरुअग
२५ ॥ अनुराधाकहिमित्रअरुज्येष्ठाइंद्र
ववान ॥ मूलाराषसपूरवाषाढाजल
पहिचान ॥ २६ ॥ विस्वेदेवाउत्तराषाढाअ
जअभिजित्र ॥ स्रवनधनिष्ठाविसुवसु
वरुणशतभिषामित्र ॥ २७ ॥ पूर्वभद्रअज
इकुचरनउत्तरअहिरवुधन्य ॥ एषारेव
तिकहतहैमुनिवरआगैगन्य ॥ २८ ॥ अथ
वारनक्षत्रयोग ॥ हरिगीतं ॥ आनंदकाल
दंडअरुधोमहिंधातासौम्यवषानो ॥ धां
क्षकेतुसिरिवत्सहिंवज्ररमुद्गररसत्रहि
जानो ॥ दत्तमित्रमानसअरुकहियेपद्म
लुंवउत्पातहिं ॥ मत्युकोंडअरुसिद्धसुक
हियेसुभअमृतइहिंभांतहिं ॥ २९ ॥ दोहरा
मूसलगदमातंगकहिराषसचंरथिरआ
न ॥ प्रवरधमानविचारतेयोगअठाईजा
न ॥ ३० ॥ सवैया ॥ कविषेहितआनंदआदि
कयोगनिअखनतेगनिलेहुअतारहिं
सगसीसहुतेशशिवासरमेक्रमसोअस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लेषहुतेमंगलारहिं॥करतैशशिनंदन
केदिनमैंअनुराधहुंतैसुरवंदिनवार
हिं॥भृगुवासरउत्तरषाढनितैशततता
रकतैगनिएशनिवारहिं॥३१॥दोहरा
आनंदआदिकयोगकोफलहैनामसु॥
मान॥नामहितेरहदुष्ठहैऔरसकल
शुभजान॥३२॥छपै॥अथसिद्धियोग॥
हयकरउत्तरपुष्यमूलरविवासरजान
हु॥मृगरोहिनगुरुमित्रअवहिमकर
दिनमानहु॥उभातुरगश्रुतिअगनसर्प
मंगलदिनमाही॥ब्रह्मभिमैकरअगन
वेदबुधदिनअवगाही॥हयमित्रपुष
गुरुअदितिसुरएजदिवसभृगुदिव
समहिं॥श्रुतिमित्रअदितिहयपुषशनि
दिनसमीरविधिस्तुतिसुभहि॥३३॥दो
अथदग्धनक्षत्राणि॥भरनिचित्राविश्व
वसुउषाईदुअरुपूष॥क्रमसोरविदिनते
गनोदग्धनषत्रसुभदूष॥३४॥अथयम
घंटदोहरा॥मघाविसाषारुद्रअरुमूलअ
ग्निविधिहस्त॥यमघंटकैरविचारतैक्रम

जो॰
२

सौनहिसुभमस्त ॥ ३५ ॥ अथ अमृतयोग ॥
करमृगहयअनुराधअसुरुपुष्य रेषविधि
जान ॥ अमृतयोगकविदत्तकहिसकल
राजसुषदान ॥ ३६ ॥ कुजहयगरहपरवे
समहिंगौनमाहिविधिघोर ॥ सुरगु
रुपुष्यविवाहहतजयदपिअमृतसिर
मोर ॥ ३७ ॥ अथ दुष्टयोगपरिहार ॥ दुष्ट
योगजेतेकहैहूलवंगवसमोइ ॥ तजि
येअनंतनदोषकेदुसहजोशसिसुभ
होइ ॥ ३८ ॥ दत्तएकमुनिवरकहैदुष्टयोग
हैजोइ ॥ निंदितकेवलगौनमहिअनत
सवतसुभसोइ ॥ ३९ ॥ एकदिवससुभ
योगअरुदुष्टयोगयोहोइ ॥ तहांकर
तसुभयोगफलदुष्टयोगफलषोइ
४० ॥ अथ होडाचक्रहरिगीता ॥ चूचेचो
लाअस्वनभरनीलीलूलेलोकहिए
आईऊएक्रतिकउवावीवुरोहिनच
हिए ॥ वेवोकाकीमृगशिरजानोकु
घङछाआद्राकरहैं ॥ केकोहाहीपुनर्वस
हहैहोडावासवग्रहहै ॥ ४१ ॥ डीडूडेडो
केहिअसलेषामामीमेपितरहै ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मोटा तिह्न पूर्व फाल्गुन टे टो पा पि उत्तरा
हे ॥ हस्त वा ण णा ठा हू हस्त हि पे पो रा री चित्रा
भाषहिं ॥ रू रे रो ता स्वाती तीन कह ते तो क
हो विशाष हिं ॥ ४२ ॥ न नी नु ने अनुराध
हिं नो या यि यु सुरपति अनुकूल हिं । ये
यो भा भी निशाचर भूधा फा ढा जल म
त भ्रल हिं ॥ भे भो जा जी उत्तरषाढा ज
जे जो ष अभिजित हीं ॥ षी षू षे षो श्रवन
धनिष्ठा गा गी गू गे चित हीं ॥ ४३ ॥ गो
सा सी सू शतभिष से सो दा दी अजइकु
पद है । कहत पुरोहित दू था झ ञा उत्तर
भद्र पद है ॥ दे दो चा ची रेवति कहिए
बार हि चार वरन है ॥ कहत गर्ग मुनि न
षत्र हूं के चार हि चार वरन है ॥ ४४ ॥ दो
हा ॥ क्रम सो नव नव बाटि के जान हु वार
ह रास ॥ ते रह गनि एम करके अभिजि
त अधिक हि जास ॥ ४५ ॥ हरिगीत छंद ह
तक हि अस्वन भरनी ह कृत्ति इक पद मे
ष हिं ॥ ल कृत्तिका तीन पाद अरु रोहिन अ
घो मृगशिर ष दे ष हिं ॥ आ धो मृग अरु आ
द्र पुनर्वसु तीन हि पाद मिथुन है ॥ पाद

जो० ४

पुनर्वसु पुष्य असलेषा करकट मुनि वरभ
न हे ॥४६॥ मघा पूर्व फागु नि अरु उत्तर
इकु पद केहर जानो ॥ उफा तीन पद हस्त
चित्र को आध कन्य का मानो ॥ आध चि
त्र को स्वाति विशाषा तीन पाद तुल क
हिए ॥ एक विशाष चरन अनुराधा ज्ये
ष्टा वृश्चिक लहिए ॥४७॥ मूला पूर्व उत्त
राषाढा एक पाद धनु ठानो ॥ ऊषा तीन
पद श्रवन धनिष्ठा अर्ध मकर चित आ
नो ॥ कुंभ धनिष्ठा आधि सतभिष पू
र्व भद्रपद तीन हिं ॥ पूरव भद्र चरन इकु
उत्तर भद्र रेवती मीन हिं ॥४८॥ दोहरा ॥
यौं विधि नषत माहि लषि सकल ग्रह
न को चार ॥ समुझि लेहु पुनि ताहि को
राशिन मे विवहार ॥४९॥ अथ राशयः ॥
रा समेष वृष मिथुन अरु कर्कट केहर ची
ह्न ॥ कन्या तुल वृश्चिक धनुष मकर कुंभ
अरु मीन ॥५०॥ चर थिर दोइ सुभाव यह
मेषादिक सब जान ॥ तैसो ते सो ताहि मे
काज पुरोहित ठान ॥५१॥ अथ राशि स्वामि
नः ॥ कुज अहर वृश्चिक मेष है वृष तुल शुक्र

निकेत॥ बुधग्रहकन्यामिथुनहै ग्रोहि
तराषहुचेत॥५२॥ कर्कसिंहशशिसूर
केमकरकुंभशनिधाम॥ गुरुगुरुकेघर
मीनसनुआवतहैयहकाम॥५३॥ राशि
हिंजानोलग्नफुनिवरतेसवदिनरैन
ताकोक्रमपरमानअववेहितकहतसु
वैन॥५४॥ अथलग्नप्रमाणं॥ तीनमीन
अरुमेषहै घटीकुंभहैंचार॥ पांचमिथु
नअरुमकरहै षटषटओरनिहार॥५५
अथलग्नचालनं॥ कवित्त॥ प्रोहितवि
षाषमेषलगनप्रभातहोतजेठवृषष
मिथुनअसाढहूमेजानिये॥ सावन
कर्कहोतभाद्रपदमांहिसिंहकन्यका
असूजतुलकातिकवषानिए॥ वृश्चि
कमघेरपौषधनुषमकरमाघफा
गुनमेकुंभचैतमीनउरआनिए॥ सू
रजरहतइंहिंससइनमासनमेंतैसें
गनहओरनकीगतिपहचानिए॥५६
दोहरा॥ ज्यौंज्यौंवीतेमासदिनवाढि
घटीवहुभाइ॥ त्यौंत्यौंघटिकालग्न
कीक्रमसौंनिशमहिंजाइ॥५७॥ अथप

ज्यो० ५

हस्थितिमयोदशुक्रसरबुधमासइकसम
रहतअस्तचंद्र॥ हैसपादद्दिनवरसहैमा
सअधिकघटमंद॥५५॥तीनपाखकुज
देवगुरुवरसएकुसुरभानु॥केतुवक्र
गतरहतहैसार्धवर्षपरमान॥५६॥पं
चकुजादिकवक्रअरुहीनचारअतिचा
र॥होनदुरतविस्तारतैकह्योनवहुतवि
चार॥६०॥अथगोचरफलं॥द्वादशचो
थोअष्टमहिंदुषदाइकराशिभानु॥
जन्मदूसरोद्वादशाहिंअष्टमकुजगनि
जान॥६१॥द्वादशअष्टमजन्मगुरुज
न्मसप्तसुरभानु॥जानहु गोचरअसु
भयहहोरठौरसुभमान॥६२॥न्रपद
रसनसवककर्मरनपठनविवाहविशे
ष॥यात्रादीत्तामैक्रमहिंसूर्यादिकव
लदेख॥६३॥अथताराविचार॥सोर
ठा॥कृस्नपक्षवलहीनहोनचंदकवि
दत्तकविदत्तकहि॥तहांगणकपरवी
नताराकोवललेतहै॥६४॥जन्मसंप
दविपदक्षेमअप्रतीतवेधान॥साधकम
त्रिभरुमित्रअतिमित्रनामनवजान॥
६५॥गनिएजन्मनक्षत्रतेवर्तमानप

र्थंत ॥ जानहु नवनवद्वादिके तारा सव म
तिमंत ॥ ६६ ॥ जन्म मरन अरि विपद है अशुभ
औरशुभ जान ॥ साकसर्ण निललौनगुड्डक
मसौं अशुभ हि दान ॥ ६७ ॥ अथ घात चंद्र ॥ स
वैया ॥ मेषको आदिकूलीरको दूसरो तीस
रो है तुलको छष दानो ॥ चौथो कधो मकरे
वृषको फुनि पंचम सिंहकौ छाठहिं ठानो ॥ वृश्चि
क सातहि आठधने मिथुने नव कन्यकको दश
मानो ॥ कुंभको दश इकादश मीनकौ द्वादश
घात निसाकर जानो ॥ ६८ ॥ दोहरा ॥ घातचंद्र ग
हवाद ग्रह भूपति सेवा मांहि ॥ प्रोहित समरसि
कार महित जो अनंत कहु नाहिं ॥ ६९ ॥ अथ विष्कुं
भादियोग ॥ छप्पै ॥ कहै योग विषकुंभ प्रीतहि आ
युषमानहि ॥ देव दत्त सो भाग अवर सोभन अ
भिधानहि ॥ कहि अतिखंड सुकर्म नाम धृति सूल
वषानो ॥ गंड वृद्धि ध्रुव नाम अवर व्याघातहि जा
नो ॥ फुनि हर्षण वज्जर सिद्धि अरु व्यतीपात मु
निवर कहै ॥ वरियान परिघ शिव सिद्धि अरु सा
ध्य नाम शुभ शुकल है ॥ ७० ॥ दोहरा ॥ ब्रह्म ऐं
द्र वैधृति क्रम हि होत सनाई योग ॥ यामे हि

जो॰ ६

नजियेदुष्टनवकहतपुरानेलोग॥७१॥आवश्य
कमेकहतहैयाकोपुनिपरिहार॥आदिघटि
केतिकवुरीताहिकहौनिरधारि॥७२॥तीनपु
ष्यमकीवज्रकीतीनघटीदुषदाइ॥षटमगं
डग्रतिगंडकीवरजतहैमुनिराइ॥७३॥कहेद
तपुनिशूलकीपांचहिनवव्याघात।परिघ
अर्धजिंदितसकलवैधृतिअरुव्यतिपात
७४॥वारनषततिथियोगहैसाठघटीपर
मान॥करणअर्धतिथिजानियेताकोक
हौवषान॥७५॥अथकरणविचार॥कहेक
रणबववालवहिंकोलवतेतिलआन
गरअरुवणिजगहावईविष्टिसातचरु
जान॥७६॥शकुनिचतुष्पदनागकिंसतु
घनकहैथिरचार॥देवदत्तकविकहत
हैताकोसवव्यवहार॥७७॥सितपरिवाप
रभागववअर्धअर्धतिथआन॥करणहो
तचरचोथलोवहुरयहीक्रमजान॥७८॥ ८
प्रोहितकृस्नचतुर्दशीपरववदलपर्यंत
शकुनिवेरगनिलेतहैसातकरणबुधवंत ७
९॥चोदशपरदलअमावशपरिववादिद
लवार॥८०होतकरणथिरशकुनिचुव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कीजेकमहिविचार॥८०॥अथ भद्राविचार भद्रामध्यमकरणसवकाजनमाहिनिषिद्ध॥नामहिविषयरिखतिमुलअगनदाहकीसिद्ध॥८१॥सुकलचौथएकादसीपरदलभद्राहोइ।आठैपूरनमासिकेपरवद्दलमहिसोइ॥८२॥कृस्नपक्षकीतीजअरुदसमीपरदलजान॥भद्रासातेचौदसीपूरवदलपहिचान॥८३॥सवैया॥देत्तनितेलषिदेवपराजितकोपवडोकरिकेशिवदेख्यो॥तासुवसोंनिकसीतवहींघरआननरूपअनूपमपेख्यो॥सातभुजापगतीनविराजतकेहरसोकटकंठसुलेख्यो॥दीरघचंचलपुछकस्योहिनमेउनिदानवनासविसेख्यो॥८४॥दोहरा॥ताकोदेवनिरीझिकेदियोकरणअधिकार॥तादिनतेजगमेभईकल्याणिभय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो.
७

कार ॥ ८५ ॥ जाते असुर संहारि कै कि
यो देव कल्यान ॥ तातै ताको मुनि
कहै कल्याणी अभिधान ॥ ८६ ॥ पंच
घटि मुष एक गल एकादश उ
र जान ॥ चार नाभि षट कटि कही
तीन पुछ परमान ॥ ८७ ॥ अथ भद्रा
परिहार ॥ दत्त जत्री काम महि भ
द्रा सुभ कर होइ ॥ पर दल की दिन
मे प्रथम दल की निशा महि सोइ
८८ ॥ कर्क सिंह अरु कुंभ झष मीत
कि रन जब होइ ॥ भूतल भद्रा हो
त तब निह चैन जिये सोइ ॥ ८९ ॥ क
न्या तुल धनु मकर जब चंद विषि
अहि धाम ॥ तामहि ताको होइ बइत
करो जत्री काम ॥ ९० ॥ चंद मेष वृ
ष मिथुन अरु होवै ह्रश्चिक माहि ॥
सुरघर भद्रा होत तब सो षष्म नत क
हू नाहि ॥ ९१ ॥ अथ ग्रहण विचार ॥
दोहरा ॥ आगे पीछे ग्रहण के तीन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तीनदिनजोइ॥ इन्नसकलसुभकाजमे
निहचैंतजिएसोइ॥ ६१॥ जन्मराशिते
ग्रहनकेंफलद्वादशराशनिमांहि॥
क्रमसोंजानोसुभअसुभकहतइतअ
वनांहि॥ ६३॥ घातहानिलक्ष्मीव्यथा
चिंतातियसुषपीर॥ मानमानकोना
शसुषलाभनाशकरिधीर॥ ६४॥ चौ
पई॥ नामहिंअसुभनिवारननिवारन
हेनहिं॥ भलीभांतकरसांतसुचेतहिं॥
करेस्वर्णगोदानविशेषे॥ अथवादुष्ट
ग्रहनजिनदेषे॥ ६५॥ अथसुक्रमा
हि विचार॥ हरिगीत॥ वृद्धअस्तसिसुदै
तगुरोहितदेवगुरोहितदोइ॥ न्यूनमा
समलमाससहितेरहदिवसपषजोहो
इ॥ एकराशिगतसूरजग्रहस्पतितजिए
सवसुभमांहीं॥ त्योंहींजीवसिंहगतहो
वैजोसूरजअजनांहीं॥ दोहरा॥ सरवप
तिमउदिनसितक्रमसोचालकहोइ॥
पांचसातदिनवृद्धहुनिपांचसातदि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो॰ ८

नमोइ ॥ ९७ ॥ हट्टवालदिनपंचदसादे
वपुसोहितजानु ॥ आवस्यकमेतीनदि
नदोषदुहुनिकोमान ॥ ९८ ॥ अथ अ
नमासविचार ॥ चेतमासमहिदतजो
होवेसंक्रमदोइ ॥ ऊनमासश्रुतिनिं
दहैकवहैआवनसोइ ॥ ९९ ॥ अथमू
लमासः ॥ जोफुनिसूरजमासमेहो
तअमावसदोइ ॥ सोनिंदितमलमा
सहैतामहिसुभनहिहोइ ॥ १०० ॥ अथ
संक्रातिविचार ॥ ग्रहकोपरवरासि
तेअपररासमहिगोन ॥ सूरजकोपरसि
द्धजगमेकहियतसंक्रोन ॥ १०१ ॥ छथे
रविदिनघोरासद्रुसुषदसंक्रांतिवषा
नो ॥ धांक्षिशशिदिनमांहिवेस्यसुष
दाइकजानो ॥ चोरसुषदकुजवारम
होदरिकहियेसोइ ॥ मंदाकिनिबुधवा
रभूमिपतिहितकरहोइ ॥ गुरुदिवसनं
दक्षिमसुषदशिनवारमिश्रपशुहितक
ही ॥ १०२ ॥ अथ रविशेषनाम ॥ दोहा ॥ रा
सनिवाररावसीजानिएनीचलोकहितकर
वही १

उत्तर दहिण अयन मृग करक विषुव
तुल मेष ॥ द्विस्वभाव षडशीति मुष
थिर हरि कुनि पद लेष ॥ १३ ॥ अथ पु
ण्य काल: ॥ ग्रेहिन संक्रम कालतै आ
गे पीछे जोइ ॥ षोडश षोडश नाडिका
पुण्य काल कहि सोइ ॥ १४ ॥ उरै परै
अधरात्र तै जो पुनि संक्रम होइ ॥ क्र
म सो पूरव पर दिवस पुण्य कहत मु
नि लोइ ॥ १५ ॥ जो पूरन अधरात मे सं
क्रमनो दिन दोइ ॥ पावन दान समान
महि जानि लेहु सब कोइ ॥ १६ ॥ हरि गी
त ॥ उदय अस्त तै पहिले पीछे करक
मकर संक्रांत हि ॥ होइ जबै तब परव
पर दिन कहहु पुण्य बहु भांत हि ॥ क
रक विसुपद घटिका पहिली मध्य मे
ष तुलमा नो ॥ उत्तरयन षडशीति
वदन महि अन्य पुण्य अति जानो
१७ ॥ अथ ग्रहादि विवेक ॥ चोपद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो
९
मा हि

तैतिलनागनिमैरविसोवतसंक्रम
करहै॥ववबालवगरचतिजवि
षि महिवेठेफुनिदिनकरहै॥कौल
वकिमनुघनुराकुनिंबरोदनकहि
सोइ॥क्रमसोअर्धवर्षमहिनिदिन
मध्यमउत्तमहोइ॥१८॥अथसंक्रांति
विमुहूर्तविचारः॥हरिगीत॥चित्र
मित्रमृगएखतुरगकरअजमघमूल
वसुकानहिं॥भुगनमूलतिहुपर
वसंक्रमतीसमहूरतजानहि॥उत्त
रतीनविशाषअदितिविधिमांहिपं
चतालीसही॥स्वातवरुनशिवह
तियमअहिमहितिथिमितकुहुतमु
नीमहि॥१९॥दोहरा॥वडोअलप
समअर्धउहिमाससमासक्रमजोइ॥पं
इहपैचतालीजोतीसमहूरतहोइ॥
२०॥अथसंक्रांतिफलं॥पीछेसंमनष
तकेदतनषतजोहोइ॥तातैगनिएती
नषटतीनषटकफुनिसोइ॥२१॥

तीनबरकफलताहिके पंथभोगकछु
नाहि॥ वसनहानिग्रहविपुलधनक
मसौं मासनिमाहि॥ २२॥ नारावलतें
होनहै दत्रचंदवलवान॥ तावलतेसं
कमकरतसरजकोवलजान॥ २३
सरजवलतेंग्रोरसवभोमाहिकैवंत
तासेनाराचंदरविवलचाहतमति
मंत॥ २४॥ इतिश्रीमद्ववलपुंडरीभ
ट्टवारपुरेहितकविरोवआत्रविरचि
तेजगतज्योतकप्रकासपंचागविचा
रोनामप्रथमउल्लासः॥ ॥ अथविवाह
विचार॥ दोहरा॥ तीनवर्गसाधनवडो
शीलवंतवरनार॥ होतशीलशुभल
गनतैं ताकोकरहु विचार॥ १॥ शुद्धग
मनवुतवधकरपीडनशुभसुभमो
हि॥ जन्मरासमपरधानहैनामराशि
वलनाहि॥ २॥ कन्याकौगुरुचाहि
येवरकौरविवलवान॥ चंदडुहूनकौ
देतकहिमाविनव्याहिनठान॥ ३॥

वल

५१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ओ॰ १०

अथ रवि बलं॥ विष ष्टइकादश दशम र
वि करपीइ नसुभ होइ॥ एज्यो पहलो
दूसतो सरसु निनवगतसोइ॥४॥ हार
श चोथो अष्टम हि होतजवै दिननाह
वरकौ काल दिषावई ता माहि कियो वि
वाह॥५॥ अथ गुरु बलं॥ दूजे पांचै सात
मैनव एकादश वीर॥ कन्याकौ सुतिसु
षकरै किए व्याह कही धीर॥६॥ त्रय म
ती जषट दशम गुरु एज्यो ईसुषदाइ॥
चतुरअष्टम द्वादशन पन गुरु शशिए
कसु भाइ॥७॥ कन्याकौ द्वादशवर
षवी तैकछुन विचार॥ ताकौ तारा चं
द्रवल गनन्हूं लग्नसुष कार॥८॥ दू
षै ताके व्याहकौ मृदगगक जो कौ
इ॥ ताको पाप लगै बडो नरक विडा
रै सोइ॥९॥ अथ वर्ग विचारः॥ दोहा
भाइ उएजोगै कहु काहिक पांच विडाल
बाहि सिंघ फुनि स्वान कहि बांदिक
ना हिक व्याल॥१०॥ पा हिक सषक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यादिसगसादिसेषचितग्रान॥ निज
पेचसग्रशिवगीयहचोथोमीनवषा
न॥ ११॥ अथगणविचारः॥ दोहा॥ द
त्तदेवगणजानियेपषपुष्यकरस्वा
श्रविनमृतसुअनुराधपुनिकणीमु
हितिह्निजराइ॥ १२॥ अजहकुपदयु
गम्भीरयुगभगयुगशिवअभिधान
यमरोहिनिनवनषतयहमानुषग
णपहिचान॥ १३॥ अहियुगवसुयुग
शक्रयुगकृत्तिकतत्तविशाष॥ कहत
पुरोहितनषतयहराषसगणचि
तराष॥ १४॥ निजनिजगणमहिं
प्रीतअतिराषससेवअमीत॥ नर
राषसमहिंमीचहैनरसुरमध्य
मप्रीत॥ १५॥ अथवर्णविचारः॥ चा
रवर्णक्रमसोगनहुमीनकर्कअ
लिआद॥ हीनवर्णकन्याशुभद
उत्तमलहतविवाद॥ १६॥ अथवै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो॰ अथ प्रीति विचार॥ वरराशिनदेखल
११ हहै विचारिहि समवराय नाके नल
घरभ हूहै रात्रिने सवास ११
रश्मिकविनसमवरासयहजानहुसिं
हअधीन॥ और लोकव्यवहार तें
जानिलेहु परवीन॥१५॥ अथ योनी
नि विचार॥ छप्पै॥ योनि अश्व अस्वि
श्व १४ यम कुंजर जानो॥ छाग
कत्रिकांपुष्य नागरोहिन मृगमा
नो॥ कूकर आर्द्रा मूल पिनरयुगमर
षक कहिये॥ अदिति समर्पमंजारती
नउत्तर गोलहिये॥ करपोनमहि
षमृगमित्रयुगवाघतस्वविवदेव
कहि॥ कपि नीरअवन एभावकनके
हरअभिजितनकुललहि॥१६॥ दो
हा॥ इनको वैर समाज दिएहदेषिलो
कव्यवहार॥ कन्यावरन्हे पैमृत्य
महि करहु जरूर विचार॥२०॥ अथ
राशिमेलन॥ दोहा॥ जानहु मीचछठे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षटै हि द्वादश धन हानि ॥ नौमै पांचै कलह
नित अरु औरस भै सुभ जानि ॥ २१ ॥ अथ विवा
ह मासः ॥ वारो मास विसाष तैं कातिक मंगसिर माह ॥ फागुन मे सुत मौष्य
धन दाइक होत विवाह ॥ २२ ॥ अथ विवाह नक्षत्र ॥ विधि युग उत्तर मीन कर म
ल मित्र मघा वाइ ॥ रेवति नषत विवाह
मे गर्ग कहत सुषदाइ ॥ २३ ॥ जन्म मा
स तिथ नषत मिह आद गर्भ दुषदाइ
मंगल दूजे गर्भ को सुष संपद सुष
दाइ ॥ २४ ॥ जेठ जुगम मध्य म कस्यो ती
न जेठ दुष धाम ॥ कहि क रोहिन नेग
न भुरक जेठ दोष उपसाम ॥ २५ ॥ अथ पंच
सलाका चक्रं ॥ पांच षरी अरु पांच ही तिर
छी रेषा लेष । देह कोण हि चक्र पह पंच
सलाका देष ॥ २६ ॥ कृत्तिके लिषिए इला
दि सम क्रम हि सना इ आन । औ जो षग जि
न जित नषत ता हि ता हि उहि ठान ॥ २७
यो हि नषि कर विवाह के प र न मासी

१२

जोइ॥ताहिनमे
जो नषत है वेह
नषत है सोइ॥२८
अथ घरशोदंबोः॥८
लत्रपातयुति वे
धववधपंचकउ
पग्रहआन॥एकार्गलजामिचभुह
कोतिसाम्यभुमिधान॥२६॥दग्धाति
थिदसा दोषयहदत्रज गतपरसिद्ध
नजिएसवैविवाहमहिवे षअती
वविधिहू॥३०॥अथ लत्ता॥द्वादसषष्ठ
मअष्ठअरुतीजनषतकोदत्त॥रवि र
विसुतगुरुकुजनकीआगेलागेलत्त
३१॥पंचमसप्तमनवमकोसितबुधत
म द्विजराइ॥हने द्विविंशतिनषतको
पीछेलत्रचलाइ॥३२॥अथ पात॥स्ल
गेइवैद्दतिहरषसाध्ययोगव्यतिपा
त॥इनकोजामेअंतहैताहिनषतम
हिपात॥३३॥अथ पावींनमते पात॥द

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नादिवाकर नषतनेमघामलेषाश्रानावि
त्रमित्रश्रुलरेवतिश्रवनषटकयहजान॥३८
श्रश्विनते गनितादि समव्याहनेनषत
जोहोइ॥पातदोषतवजानिएनिहचे
नजियेसोइ॥३५॥श्रथयुतिदोषाहोहाद
नविवाहनक्षत्रमेहोइषचरजोकोइ
विनाशुक्रशुभश्रुभनकोकह्योदोषयु
तिसोइ॥३६॥श्रथवेधदो॥व्याह
नषतकोरेषमहिंहोइषचरजोश्रान
पंचशलाकाचक्रमहिवेधदोषतव
जान॥३७॥दू॥विद्धपरसपरश्रुश्व भाग्य
श्रनुराधभरनहै॥श्रभिजितश्रजहग
सीसविश्वविवदेवश्रगनहे॥शंकरजि
लनिमचारश्रादितिगुरुसुरमरदार
हि॥वसुपत्रगमूलविसुपितरमा
लतशतनारहि॥कविदेवदत्तश्रज
एकपदनलउत्तराभद्रकर॥कहि
उत्तरफागुनरेवतीवेधदोषश्रुतिद्व:

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो० १३

अक्षर ॥ ३८ ॥ अथ पंचक ॥ दोहा ॥ संमै
नेवीते दिवस धरिये पांच हि ठोर ॥ क
मसो रस ६ गुन ३ वेद १ वसु ८ वेद ४
ताहि सो जोर ॥ ३९ ॥ नव नव भाग किये
रहै पांच अंगज होहि दोष ॥ रोग अगिन
नृप चोर मृति वा नत होइ क्रम देष ॥ ४०
अथ जामित्र ॥ दो ॥ शशि ते अथवा
म लग्न ते सप्त जोग गृह होइ ॥ होत दोष
जामित्र तव शुभ को शुभ है सोइ ॥ ४१
अथ उपग्रह ॥ दो ॥ प्रोहित स्वरजन
षत ते व्याहन षत जो होइ ॥ पंचम स
प्तम अष्टम हि दशम चतुर्दस जोइ ॥
पंचदश अष्टादश बीस एक
मस्थान ॥ पंच नषत इकुवीस ते दो
ष उपग्रह जान ॥ ४३ ॥ अथ एकार्ग
ला दो ॥ परिघ वज्र अति गंड अरु गंड
सूल व्यतिपात ॥ प्रथम योग कवि
द्ध कहि वैधृति अरु व्याघात ॥ ४४
इन महि स्वरजन षत ते वेदन षत जो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

होइ॥ विषमअशुभिजिनसमेतहीएकागील
कहिमोइ॥४५॥अथक्रांतिसाम्यदोहाध
नुयुगऊषत्तियनऊहृषअजिहरिद्वदितु
लमाहि॥जोरविससिअलिककैनव॰
क्रांतिसाम्यअशुभनाहि॥४६॥अथदधा
तिथिमीनधनुषहृषकलशअरुमेष
करकरमाहि॥तियायुग्मअलिसिंहअकु
नितुलामकरअवगाहि॥४७॥जोइन
हेहेरासिमेहिहोइदत्तदिनराइ॥दूजी
तेषटयुग्मतिथिकहीदग्धदुषदाइ॥
४८॥अथदोषपरिहार॥लत्तातजिये
मालवेकुरुजांगलमहिपात॥एकार्ग
लकशमीरमहीवेधसवतहैघात॥४९
अथलग्नविचार॥हरि॰गीतकिर
णाबलबेटलग्नगतसिगरेसप्तममां॰
ही॥द्वादसशोरतीजभृगुनंदनभोम
दशमअशुभनाहीं॥शत्रुभवनगतहि
मकरनंदनशुक्रलग्नकोसांई॥अष्ट

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

५

श्री

मचेंदलग्नपतिकुजकरपीडनमहि
दुषदाई ॥ ५० ॥ श्री यंधादि लग्न विवेक
हो रा ॥ श्री धमेषवृषसिंहदिनवरको
मत्तिदुषदाइ ॥ कन्यामकरकुली
र निसकन्याकोनसुहाइ ॥ मृगतु
लअलिमिथुनराहूमहिवधिरदुषन
कोषान ॥ कुलनामककुवरेधनुष
धरजषसोऊहिजान ॥ ५१ ॥ श्री धेवो
रेकूवरेदुषलग्नजोमान ॥ बुधगुरु
भार्गवदृष्ट्युतदेवदतमुभजान ॥ ५२
॥ क्याकरहैंसबदुषदृषगजोरकुसर
गुलनेक ॥ मत्तमतंगजयूथकोमार
नकेहरएक ॥ ५३ ॥ सत्युरुमथवाष्ठ
९० कबुधकेदुकोइंधनमाहि ॥ होइजे
वेकरपीडमहिदोषसकलमिटिजांहि
व्याहनषतमहिव्याहकेकीजेसवै
प्रचार ॥ मोघूलिकमहिदनकहि
कीजेकछुनविचार ॥ ५४ ॥ अथ धुप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वेधा२ दुपा॥ अहि रवुध न्यावै तीन विष्युनेतीन
त्रिषासै की र॥ मब अुर जमते चार मि
त्र विधि पुष्य मृधा धर॥ बाम ववा सर
ना ष भौम शशि नेर नहीना॥ नवल
वध्र परवेस लग्न थिर माहि सुभ ची
न्हा॥ क्रू निय हीन षन विन मघ अदिति
बुध समेत उरे व रस॥ अलि मेष कुंभ
गत भानु कहि दने हैरागम मे स रस॥
५५॥ दोहा॥ दहन संमुष सुक्र अति दुष
हुष्ट हि रागम माहि॥ तामहि शिशुअु
रु गर्भनी कौं हुजावै नाहि॥ ५६॥ जो कुच
संभव पुहप को दरशवा पग्घर होइ॥ न
वलिय जावै मासुरे सुक्र दोष नहि कोइ
५७॥ दुर भिष विग्रह मे एक गाम पुर
माहि॥ नवल वधूपरवेश है सुक्र दोष
कहु नाहि॥ ५८॥ रेवतम्र गमी सल सि
जो लो हिम कर होइ॥ तो लौं संधो सुक्र
सुभ भेदत्त न सोइ॥ ५९॥ अथ संस्कार विचा
स्नन मुष

२४

रः॥ हरिगीत॥ जेठविसाखमाघअरुफा
गुननभश्राश्विनअगहनमे॥ श्वेतपाष
सुभवारलग्नतिथिदिनमहिमेतवस
नमे॥ उत्तरतीनतीनकरनैविधिपुष्य
मित्रद्विजराई॥ रुषतुरगहरितीनन
षतमहिपहिलोरजसुभदाइ॥६४॥ दो
सेकमभद्रानिंदनिसपर्वअमासमोहि
रसवसुरविअरुरिक्तातिथ्यप्रथमसुष
सुभनाहि॥६२॥ अथपरजेवलस्नानं दो
सुर्यमविधिकरशशिपवनमित्रईसकिं
कान॥ विस्वेवसुउभसुभदिवसग्रह
करे पतिसिनान॥६३॥ अथगर्भाधानं दो॥ उ
त्तरमृगहस्तितीनविधिमित्रश्रवनमूल
हस्त॥ छोरिरिक्तातिथिसुभदिवसग
र्भाधानप्रसस्त॥६४॥ अथपुंसवनं दो॥
श्रुतितिपुरमृगमूलकरहरिकेजगु
रुरविवार॥ सुभदिनकरिएपुंसवन
कुलाचारअनुसार॥६५॥ अथजन्मलग
नविचार॥ दो॥ त्रिषटद्रकादशअसुभ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुभ केंद्र कोण सुभ चीह्न ॥ जन्म समैकु
जदसम सासित नु सुरि सुख महीन ॥ ७६ ॥
इस तनते यविस्तारते कछ्यो न वहुत वि
चार ॥ श्रोहित जातक ग्रंथते लीजे सक
ल ससार ॥ ७७ ॥ सुथ मूल विचार ॥ दो० ॥
पांच पुरंदर मूलको आठ मूल की आद ॥
घटिका सुभु गन मूलकहि मुनिवर ना
रद आद ॥ ७८ ॥ सो० ॥ ७१ ॥ ना महि जन मे वा
लत जि एसु घवाव सवरस ॥ फल्यो नेह
के जाल पिता न देषे ताहि कों ॥ ७९ ॥ प्रथ
म चरन महि वाप विन सै जननी दूसरे
तीजो धन को षाय चौथो सुभ है सवनि
को ॥ ८० ॥ दो० ॥ श्रोहित जो फल मूल को भु
जं न षत महि सोइ ॥ जानहु उलटो अंत
ले भाति कि येसुभ होइ ॥ ८१ ॥ अथ प्र सूति
स्नान ॥ हरि गी ॥ उभ ते तीन उफा करे रो
हिन विस्व समीरन सोम महि ॥ मित्र अव षद
परस्त न सनान हि वार सूरगुरु भोम महि ॥
तजर सव सुर विरिक्त सुहित्ति युगलिव

१६

यमपितरविशाषहिं॥ मूलननलहरिपा
चकबुधशनिदेवदत्तकविभाषहिं ७३
अथ नाम कर्म॥ दो॰॥ विधियुगअरुज
मतीनउभतीनविसमैचार॥ मिनअरु
हितियुगअरुभदिवसनामककेअरुय
कार॥ ७४॥ अथ जल पूजा शीतकिरन
अरुरेनचरदेवअरोहितआन॥ अरुदि
तिहस्तअनुराधपुनिदेवदत्तकहि
कान॥ वासरशनअमेनरासिअरुअ
रप जितजोइ॥ रजेजल परसुतनि
यमामपरीजवहोइ॥ ७५॥ अथ वाल
वहिरागमने दोहा॥ तीजेचौथेमासम
हिगमननमरहरनमांहि॥ वालकवाहर
आनियेअरुकेभोमदिननाहि॥ ७६॥ अ
थ भूम्युपवेशनं॥ दो॰॥ नारीमेगलगा
वहींवाढनपरमहुलास॥ वोधिअरुकन
कहितरतवरवीततपचममास॥ ७७॥ अ
थैमविधियुगमित्रयुगअरुदितिविष्य

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तेचार अहिरबुधनअरुवातमहिं रि
केहीनशुभवार ॥ ७६ ॥ विधिवित भनि
वराहको रजिदेषकुजमुदू ॥ मिवे
ठावेवालकोप्रोहितकहतसुखदू ॥ ८०
ताहिसमैपुनिबालकेआगेधरिये
आन ॥ कनकवसनपुस्तकतुलालेषनअन्नकृपान ॥ ८१ ॥ तामहिंबालक
मुदितमनजाकोपकरेजाय ॥ ताही
सोउपजीवकाताकीदेहुवताइ ॥ ८२
अथअन्नप्राशनं ॥ दोहा ॥ अर्पमतेअ
नविषतेचारचारमृगसीस ॥ अदि
तियुग्मउभतीनअहमित्रप्रजाकोईस ॥ ८३ ॥ नंदाद्वादशअष्टमीचिन
तिथिशोभनवार ॥ अन्नपराशनमे
कन्योषष्ठमासशुभकार ॥ ८४ ॥ अथ
कर्णवेध ॥ दोहा ॥ नारायणयुगए
वयुगअदितिपुष्यअरुचित्र कह
नवरोहिनदत्तकुनिहस्तामृगशिर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

४९

मित्र ॥ ८५ ॥ उरे वत्सर मांहि नजि चे
नपो षहरि सैन ॥ सो मन वासर ति
थिन महि कलि वेध सुष देन ॥ ८६ ॥ अ
थ अन्नप्रारंभ ॥ दो ॥ तीन तीन शिव
हस्त नै मित्र तु रग अरु कान ॥ शुभ
वासर महिं मिथुन कौ ली पि ग्रह
ल शुभ जान ॥ ८७ ॥ अथ विद्यारंभ ॥
मग पंच कर दश मूल नै विधि षट मै
त्रय तार ॥ शुभ कर विद्यारंभ महिं र
वि गुरु शुक्र बुध सित वार ॥ ८८ ॥ अथ चू
डाकर्म ॥ चौ लती सरेवर सनै विष
मवर्स महिं होइ ॥ न जि भुअ रम व ह
र वि त्रिकन तिथि हिं पर्व सु ह जोइ ॥
८९ ॥ चेत रहित उत्तर अयन बुध गु
रु शशि सित वार ॥ लग्न अंस सकुनि
नाहिं कौ चौलक में शुभकार ॥ ९० ॥
तीन तीन हरि हस्त ते पुष्य पुनर्वसु
जोइ ॥ शक्र तुरग मृग पष महिं चौ
लक में शुभ होइ ॥ ९१ ॥ शुभ नहि ष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लघ ग कैंडु गान सुभ रव ग सुभ कर
जान॥ तारा सुभ षट अष्ट नव दूजी
चौथी मान॥ ६३॥ अथ नित्य छौर॥ दोहा
छौर दंत नष काज महिं चौल नषत
तिथि वार॥ छौरि पर्व निशान व महि
न संक्रांति कहित कार॥ ६४॥ पंचम
पंचम दिवस महि छौर नषत ह्वि न
मोहि॥ समस्त कर्म हि नृपन को नि
दन षत महि नाहि॥ ६५॥ ब्याह जनन हि
जनृप कहे वंधमोषज व होइं मात
पिता कै मरण दिन छौर दोष न हि
कोइ॥ ६६॥ षट हल त्रिक मूल पांच म
ष विधि वसु उत्तर चार॥ तीन मित्र
छौरी मरे यदपि आप सुष चार॥ ६७
अथ उपनयनं॥ दोहा॥ गर्भहु ते वा
जन्म ते तीन वर्ष परमान॥ वसु शि
वै वि बिन वर सम महिं क्रमसौ व्रत वि
धि ठान॥ ६८॥ व्रत मे विद्यारंभ के सुभ
दिन वन गुरु वार॥ सोम सहित सिष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मो॰ १८ सरसैंसरहैंगंगुनैंतिथिसुभकार
९८॥सोरठा॥पंचमतिथिपर्यंतलु
सपक्षुतवेधसुभ॥नहिसुभदु
पहरसंतदेवदत्तकविकहतहैं ९
७॥दोहा॥गुरुसितबुधिपति
हिजनकेअपनकेरविभौम॥सदु
नकोबुधजानिएकविवेशनकोसोम
९९॥क्रमसोंचारहिवर्गकेशाषाधि
पपरमान॥सुरगुरुभार्गवअरुतन
यशशिनंदनउरआन॥१००॥बुनवं
धनमेंसबनिकौशाषाधिपबल
वंत॥वहियतेसेंदेवगुरुहिमकर
नलनीकेंत॥१०१॥अथघटुरिकावेध
युतमासादिक।चैतविनविनकुज
वासरयुक्त॥रूपकोपरिहैव्याह
तेघुरिकावेधनयुक्त॥१०२॥अथघटा
जाभिषेक॥दो०॥पुष्यविष्णुयुगभि
त्रयुगविधियुगमघयमतीनसुहि
रबुधनतेतीनसुभवासरपछबदी

न ॥ २३ ॥ होहि उदित गुरु सुक्र जब सूर
ज उत्तर जाइ ॥ कीजे नृप अभिषेक तन
वदन सकल सुख दाइ ॥ २४ ॥ इति श्रीम
सुबल पुंडीर भइवाल पुरोहित दस
विर चित जगन ज्योति प्रकासे वि
वाह संस्कार विचारौ महिनीय उल्ला
सः ॥ अथ सकल मुहूर्त विचारः ॥ दोहा
मूल श्रवन विव देवय मघ हिस्त गर
वीतीन ॥ अधोवदन इन मांहि सब अ
धर काज सुभ कीजू ॥ २५ ॥ उत्तर रह रितती
न सिव पुष्य कमल भव जोइ ॥ ऊरध
मुष इन मे सुभ कहे काज ऊर्ध मुष होइ
२ ॥ रव पुस्य कर तीन मृग अस्व दिति मि
त्र पुग अस्वान ॥ टेढे मुष इन मे सकल
टेढे काज न ठान ॥ २७ ॥ अथ नव बस्त्र परि
धाने ॥ दोहा ॥ अस्व पुष्य विधि सुदिति
बसु रष उत्तरा तीन ॥ कर पंच क बुध सु
क गुरु पहिरे वस्त्र नवीन ॥ २८ ॥ सोम
भोम सनिवार अरु रिक्ता तिथि परसिद्व

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मो· १९ रतनपटकोपहिरवोप्रोहितकेहतनि
षिद्ध॥५॥पुष्यपुनर्वसुउत्तरातीन
रोहिनीमांहि॥नवपटभूषनस्राहि
कहुधरेसुहागनना हि॥६॥धरिए
कुजदिनमूलनपट पाणीपीडनरूप
दीन॥हिजस्वामसनतेनव्यपटधार
हुसुद्धरतहीन॥ ७॥ अथराजदर्शने
रोहरा॥नारायनकरतवगुरुविधि
पुगउत्तरतीन॥रेवतमृगन मैत्रम
हिरपमोमिलेप्रवीन॥८॥अथअ
थकर्म॥रवबुम्नवसयुग्मकरपो
नस्रदितिपुगसोम॥मासतुरंगम
काजमहितजकुरिक्तातिथभोम॥९
हरिगीत॥लिखिएअग्ग्मुकारचक
महिनघतस्रुभिजिनसमेनहीं॥स
रनषततेपांचसकंधलिदत्रपीठद
शवेतहि॥दोइरछमहिंपांचउद
रमेहेसुषमेहितकारी॥तीनसकंध
पीठसुषहेमैनव्यत्तरगमुसवारी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ राजकर्म ॥ दोहा ॥ पुष्य मृगसकर अनु
रम अरुअ अदिति युग्म श्रुति तीन ॥ पोन
मित्र मृग मांहि राजकाज करत परवी
न ॥ २ ॥ अथ शस्त्र घटने ॥ हय युग अहि
युग शक्र युग भ राज लअज इकु पाइ ॥
हि मकर मृग न विशाष पिवि शस्त्र घ
टन सुषदाइ ॥ ३ ॥ अथ समवैश हुधार ले
ष्वै ॥ रोहिन उत्तर तीन पुष्य कर रेवति
श्रेवहिं ॥ वासव अश्व विशाष अदिति
अभिजिन अनु मित्र हिं ॥ विना रिक्त ति
थि शुक्र देवगुरु आदित वारहिं ॥ धर
हु लग्न थिर मांहि षड गआदि षाहि
कहय यारहि ॥ कु निइ नहिं वार नल
अमहिं नारायन अंतक सहित ॥ पर
जेक पीठ आदिकन की देवदत्त माइ
न कहत ॥ ४ ॥ अथ भषन घटने ॥ दो.
रोहिन उत्तर तीन हरि तीन अदिति यु
ग वाइ ॥ अश्वि कर अनुभ वार महि भ
षन घडो वनाइ ॥ ५ ॥ भ राज लअज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो॰ २ सदमलशिवअहियुगयमसुरराइ
इनतजिरविकुजसुभ्रगुओभ्रष
नरत्नजरार॥५४॥सोमोतीयुतसु
भपवनउफाश्रद्वितियुगचित्र॥
विश्वभुजहरितीनउभतीनउषा
करमित्र॥५६॥श्रुघस्वतीजतपात्र
भोजनें॥ दो॰॥मोतीयुतभ्रषनभ
तशशियुधेयुहमितवार॥स्वती
स्नानभोजनप्रथमभोजनश्रुतिस
बकार॥५७॥श्रुघवस्त्रपसालनें॥दो॰
करपेचकहयवस्त्रुअदितियुगम
हिंवसनपक्षरां॥हुरिपितरदिन
पर्वदृढिरिक्राशनिवुधवार॥५८
श्रुघश्रुधादिनलवविचार॥दो॰हु
संधकमंदविलोचनहिकरएसु
लोचनतार॥रोहिनतेकमसोगने
फिशिफिरिचारहिचार॥५९॥हरिगीत
संधविशाषमलिलवसुसुर्यम१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षुष्यविधिजानो॥ मित्रविस्मवा
रुनकरहृयमृगनसापमंदहृगमानो
इंदवृस्तमयजरकुपदचित्रायमशि
वमघहैकाने॥ स्रलघिमुभवा
तमृगनभगत्रदितिमूलोघनठा
ने॥२०॥ नष्टपदारयलाभश्रंधम
हितुरनिकरतेहोइ॥ मंदविलो
चनमोहियतनमांलभेपुरोहितशो
इ॥ मुनिएदूरदेशनहिमिलहैवही
काएहृगमाही॥ होइमूलोचनमै
कुनिमाकोश्रवनलाभकछुनाही
२१॥ अथ दुष्पयोगः॥ दो॥ रवपुन
र्वसुपुष्यमृगतरगनसतचार॥ ह
रिवसुशतचरलग्नमहिंशुभहैध
नव्यवहार॥२२॥ रविकुजवासरस
त्रमहिंहृद्वियोगकरजोइ॥ इनमे
दिनमतलीजिएलियोवेसमहोइ
२३॥ अथ हस्तलनादिपणो उपाती
णो

न उभतीन गुरुविधियुग विष्मविशा
ष॥ मित्रसूलशत विष्ममहिवेलरो,
पसुभ भाष॥२४॥ अथ षैषज्यक
र्मे॥ रवषुनर्वसुपुष्यमृगमित्रम
लकरवात॥ तक्षनुरेगमकणिते
तीनलग्नविवगात॥२५॥ अरुसु
भवेस्लग्नगतउनहिंकोषुनि
वार॥ शोभनमित्रजनुनषतवि
नमिषजकर्मसुभकार॥२६॥ अथ
नवान्नभोजने॥ दोहा॥ नजिनंदा
शनिभौमदिनमासपोषमुरुचैत
रवपुनर्वसुपुष्यमहित्यमृगत
समेत॥२७॥ श्रवणाधनिष्ठाश
तभिषाहस्तमित्रमरुवाइ॥ भोज
नवतनअन्नकोदेवदत्तसुषदाइ
२८॥ अथ हलप्रचार॥ अर्थमतेषट

विष्मतेचारमध्यानि
शाचार पुष्यपुनर्व

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुमोमविधिउभरेवतिहयंतार॥२६

होरिद्रुठीअरुरिक्तातिथरविरविते

दनवार॥सुषदायकहलमैकहैदे

वदत्तनिरधार॥ओहिनसरजनष

तेप्रथमनषतकौ।चीहू॥तातैक्रमसें

ठानिएतीनतीनअरुतीन॥२९॥पांच

तीनअरुपावहैतीननषतपुनिदाइ

तामहिक्रमसौहलवहैहानेवृद्धि

फलहोइ॥अयवीजोप्री॥प्रोहित

हलकैनषतैमहिवीजवापसुभजा

न॥नजिकुजेदिनविवदेवसातता

रअदितिअरुकान॥३३॥सोरठा॥

लिषिएभुजंअकारचक्रनाहिकेसी

समहिं॥दीजौतीनहिंताररहुनष

ततैतीनराल॥३४॥लद्रागउदरमें

नारचारपहुमहिंदीजिये॥वाहिरपो

चसलारवीजवापमहिउरसुभ

सो° २२ ३५॥ अष्टसप्तरोपणं॥ दोहरा॥ विव
हैवनविधिवरुनअरुअजपदअर्थम
ढोर॥ ओहितकुजशनिहीनसप्तरो
पशुभहोइ॥३६॥ अष्टकलमहैने॥ दो°
मित्रतीनभगतीनविधिरेवतिअरुय
ह्सोइ॥ शुभवासरमहिदग्धकहिकल
मर्दनशुभदाइ॥३७॥ अष्टधान्यहेद
शव्यपने॥ वासवतेषटसोमयुग
यमयुगअर्थमतीन॥ अजपदयुगग
रुतीनअरुपौनमंदकुजहीन॥३८॥इ
नमहिवीकेधानकोहेदनकरैसु
जान॥ ओहितधाकेअन्नकोउत्तरवि
धिमहिठान॥३९॥ मूषशिरामोक्षवि
रेचवमन॥ वरुनमित्रयुगचित्रयुग
तुरगपुष्यकरकान॥ हस्तपत्रबुध
सौरविनरविकुजगुरुदिनठान॥४०॥
रो श्रयौगोत्रविनिर्णया॥ हस्तपवनयुक
हूतनअहिभगजलअजपदमोहि॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जाकोउपजेरोगकछुसोनरजीवेना
हिं॥सोरठा॥मित्रेवतीमांहिभये
रोगचिरथिररहे॥तीसदिवसमध
मांहिविसुसोममहिमासलगि॥
४२॥सुरपतिहस्तविशाषमांहिर
हैइक्कुपाषहीं॥एकादशदिनमा
षविस्नुवरुणायमनहमहि॥४३॥
दोहरा॥अश्विनकृत्तिकमूलमहि
नवदिनज्वरकोथान॥उफाउभावि
धिम्रदितिपुगमांहिसातदिनआन
४४॥उत्तरम्रहिपुगम्रदितिविधिरष
समीरननार॥रोगविमुक्तसनानमहिं
तजइसोमस्तुकार॥४५॥रिक्तातिथच
रलग्नबलहीनवेइपहिचान॥शेहि
तदृष्टोरोगतेमानुषकरेसनान॥४
६॥अथमेषा॥दोहा॥पुष्यसकलगति
वेश्रितनदनवरागपुरवीन॥मविचाम
देमहिसेवामिकीसेवाकरैप्रवीन॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो॰
२३

४७॥ राशि पतिन की मित्रता यो विमि
श्र यो होइ ॥ नव सुष पावै सेवतै स्वामी
सेवक दोइ ॥४८॥ अथ जलाशय षनने ॥
दो॰॥ वसु पुग उभ पुग मित्र मृग विष्र
उष्य मघ चार ॥ वापी कूप तडाग को
करो षनन सुभ कार ॥४९॥ अथ नौका
रंभ ॥ भगा पंच क मृग मूल दश मित्र
श्रु हिति सुरु नार ॥ सुभ तिथ नौकार
भ महिं सुभ रवि गुरु सित वार ॥५०॥
अथ नौका गमने ॥ दो॰॥ हरि पुग हय
गुरु मित्र मृग भगा जल सुजपद हस्त
प्रो हिन सुभ तिथ वार महिं नौका ग
मन प्रसस्त ॥५१॥ अथ संधि कर्म ॥ भ
गस्वर गुरु मघ चराध महिं वसु रवि मि
न तिय जोइ ॥ नैतिल सुभ षगादि वस
महिं रत्न संधि सुभ होइ ॥५२॥ अथ शि
ल्प शिक्षा ॥ उष्य पुनर्व सु मित्र उभ मीन
उफाते चार ॥ विधि पुग गम्र्य भ चार म
हिं सिष हु शिल्प सुष कार ॥५३॥ अ

षधर्मकर्म ॥ दो० ॥ मूषलतुरगमरगमि
त्रहरितीनअदितिकरतीन ॥ पुष्यमै
म्यदिनमेकरैधर्मकर्मपरवीन ॥ ५४
अथजलाशयादिप्रतिष्ठाके ॥ रष
पुनर्वसुमित्रविधियुगउभतीन हि
नार ॥ अर्थमतत्वसमीरमूलहस्ताव
षतेचार ॥ ५५ ॥ दत्त उदिनगुरुसुक्र
शशिसौम्यअयनसितपाष ॥ तजि
कुजरिक्तजलासमुरयागप्रतिष्ठा
भाष ॥ ५६ ॥ अथवीरसाधने ॥ दो० ॥
मूलपितरउगसीसघमसंकरसु
रबुधवार ॥ कैमलग्नमहिंहोनहै
सिद्धवीरसुभिचार ॥ ५७ ॥ अथजात्रा
विचारः ॥ दो० ॥ पुष्यपुनर्वसुरषमृ
गवसुअ[illegible]हैंयहहस्त ॥ दमकहतन
वनषतयहगोनमांहिपरसस्त ॥ ५८
तवतीनचेतकपितरसंकरसर्पक
शान ॥ प्रतिनिदितहैगमनमहिंमघम
हरि

मो॰ ९८

से॰ वषान॥५९॥ हरिगीतछंद॥ मंद सु
सहूलत नषत महिं परव गोनन करिए॥
भजरकुणदरेव गुलबा मरदछन॰
पाइन धरिए॥ रोहिन मार्गव मानु
रिव समे पहुम कौ मत जावो॥ अ
र्थ म भौम सोम सुतवारहि उत्तरको
न सिधावो॥६०॥ दो॰॥ लेछिजाइ शुभ
वहत जोइ न ससलन कौ कोइ॥ भद्र
मनोरथ पाइ दुषहर फिरि आवै सो
इ॥६१॥ अथ योगनी विचार॥ दो॰॥
परेव उत्तर अगन सुरु नैरत नरत
न मांहि॥ पहुम वायव ईस राहि सक्रम
सौं जोगनि जांहि॥६२॥ एकमति॰
थिलेदसौ लौ शुभ न हि मन मुषवा
म॥ श्रेहित दहुन पीठ महि सो इ
मचारत काम॥६३॥ अथ सूर्य वि
चार॥ योनिस अंतमयामतेयामयु
गम है चार॥ परव नेक्रम सौं गनेता
महि रवि को चार॥६४॥ दहुन सूर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सैनोकरिएपीठमेसनमुषदुष्टदेनेरा

जगोनकरवामहिकरपरवेस॥६५
अथवेद्दविचार॥दो॥परवतेक
मसोरहैचारदिसानमहिवेद॥
मेषादिकगातगमनमहिंमन
सुषकरनअनेद॥६६॥अथकालः
दो॥दहुननेकमसेंगन्योसर्वबा
रनेकाल॥ताकोवरजेसामुहेयु
दुजातभुअपाल॥६७॥अथयात्रा
निषेधः॥फरनमासीअष्टमीद्व
ठीद्वादसीजोइ॥दुष्टयोगतार
कदरसरिक्तभइजवहोइ॥६८॥
कुंभलगनअरुलमाहिकोनवमुंस
कजोआन॥दसमभवेइनमोहि
दुषदाइकहोतपयान॥अथराहू
विचारः॥दो॥परववाइववदहमे
हिएसीपश्चिममाहि॥अगनकु
वेरीरापसीरिसमैकसमोजाहि॥
राहुआठअधयाममहिदिनअ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ज्यो॰ २५

रजनीमांहि॥ रत्नएकरहुनषु
भदसनमुषवामेंनाहि॥ ६९॥ सु
ष स्नुरह प्र वेस॥ चित्रमित्रमृगपु
ष्यमृगनोहिनउत्तरतीन॥ रसरवि
रिक्तविहीनतिथवासरक्रूर॥ ७०॥ विहीन
कहतरत्नजोगमनतेंघरकोंफि
रयोनरेस॥ सोइनमेंश्रुतिसुहि
नमनघरमेंकरेंप्रवेश॥ ७१॥ श्रो
हिनगृहपरवेसमेंइकदशानिष
तनिषिद्ध॥ मित्रमित्रफलला
हिकोकहेंग्रंथपरसिद्ध॥ ७२॥
पुष्यपुनर्वसुपौनहरिलीनंतर
गमहिगाइ॥ जोघरआवैगौन
करिनरतनहिफिरिचढिजाइ॥
७३॥ गनीविनमेंहीसमहिक्र
त्रिकमेंघरनाश॥ जेठमूलशि
वसर्णमहिजेठसुतकोनाश॥
७४॥ अजरकुपदस्वेनकसालि

लमगयममांहिनरेश फिरेगोगए
मनतैचीराईकरनमरनपरवेश
१५॥ अथ पंचकविचार॥ चौपई॥
जबहिमकरघटऊषमेहोई॥ नव
यहकामकरेमनकोई॥ प्रेतदाह
यमदिशमहियान॥ गृहगोपत्र
सुषसेजविनान॥ १६॥ अथ गृहा
रंभ॥ दोहरा॥ दसरासजिसगाम
कीनामराशितेहोइ॥ ११ग २सर ५
रवग ६ दिश १ हइ ११ मितगामसु
षदहैसोइ॥ १७॥ इनोग्रपनोवर्गकि
रिपरवर्गहुमोंजोर॥ नेसंकुनिप
रवर्गकोराषमिचहेठोर॥ १८॥ अथ
भागलैउरूनिकोरोषग्रेकजोहो
इ॥ जोगुनितामहिअधिकहैदेन
हारकहिसोइ॥ १९॥ उभयगविवि
धिगुगविम्वगुरुवस्युगमूर्यम
वार॥ मित्रसरनआरंभमहिंश

औ॰ २६ लग्नौरसुभवार ॥ ८३ ॥ सुगहनक्ष
तुनपोषमहिसावनसुरुवैसाष
सुषदमरनआरंभमैदेवदत्तसुरु
भाष ॥ ८४ ॥ कर्कसिंहमृगकुंभगान
लरदत्तजवहोइ ॥ परवसुथवाप
दुमहिंहारकैसवकोइ ॥ ८५ ॥ वृ
श्चिकतुलवृषमेषमहिंदिननाइ
कजषजाइ ॥ पहुमउत्तरहारनवै
दत्तसकलसुषदाइ ॥ ८६ ॥ अथग्र
ह प्रवेश चोपई ॥ माघजेठफागु
नसुक्रराधा ॥ विधिसुगनलसषसु
तुराधा ॥ उत्तमंदसहिनसुभवार
हि ॥ घरपरवेशमाहिसुषकारहि
गृहहोमविचार ॥ अरिलछंद ॥ ए
कसुकृतितिथिवारचारसुवसोधिए
मेषसुकलैवासगृगनकोदेषिए
एकहुहुकेनाकनागघरमेरहे ॥ ८
नीनसलितिनेमरमितृगनसुनिज

नकहे ॥८८॥ दोहरा ॥ क्रमसोंग्रहगी
चनालमहिंहोनप्रानधननाश ॥ दे
वदत्रयुतिरालहैभूमिसुगनको
वास ॥८९॥ करिनवकोठतातिमे
सिरनषततेम्राद ॥ तीनतीनलि
षियेनषतचंदनषतमर्याद ॥९०
रविबुधसितशनिचंदकुजजी
वराहुग्ररुकेत ॥ कोठनवइनके
क्रमहिंप्रोहितगनहुसचेत ॥९१
शांतिकपौष्टिकहोमहिंसुभ
सुभकोठेजान ॥ असुभनकेपुनि
असुभहैतामहिंहोमनठान ॥९२
अथ शांतिकपौष्टिककर्म ॥ दोहा

र	बु	शु	श	चं	भौ	जी	रा	के
१	३	३	३	३	३	३	३	३

उकाषवनउ
भतीनकर
मित्रविस्वतैवार ॥ पुष्यपुनर्वसुपित
नरविधिसोमनतिथिसुभवार ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो॰ २२ सुभकरगुरुसितसुक्लजिशांति
कपौष्टिकमांहि॥ केतआदउत्पा
तमहिसुक्तविचारैनाहि॥६४॥
अथसकलकर्म॥ दोहा॥ सौम्या
यनगुरुसितउदयसुकलपछ
सुभवार॥ सफलकाजमहिंसु
नकहैलीजैसबसुषकार॥६५॥
हस्तपछदहनसुयनरिक्तवि
छिषलवार॥ रावुहननविषसु
गनसुखहोतसिद्धविवहार॥
६६॥ श्रीमतगुरुपरसादतेदेवद
त्तचितलाइ॥ रच्योग्रंथसंछेप
करिसुजनसुधरसुपढाइ॥६७
विक्रमसंवतवेदयुगवसुसिस
१८४४ सिविशाषमास॥ देवदत्तरच
कियेअगनजोतिपरकास॥६८॥
इतिश्रीमत्सुडीरभट्टवारपुरोहितद
त्तक्रतेजगनज्योतिकप्रकासेसैली
यउल्लासः॥समाप्त

1406 MS

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative